Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- दिसम्बर २०१९
अङ्क -०९ (२०२)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं
प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

पल्लव

❖ **सम्पादकीय :**
- प्राचीनतम-जैन धर्म : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- मेरे गुरु आज भी मेरे पास है- : श्री विरागसागर महाराज जी ६
- योग शरणम् गच्छामि :आर्यि.पुनीत चैतन्यमतिश्री ७
- गुरुभक्ति से टलते हैं संकट : श्र. सुबलसागर जी ८
- अध्यात्म हृदय से उपजता है मन से नही : आ.विनम्रसागरजी महाराज १०
- मायाचारी कायरता का प्रतीक : आर्यिका विदूषीश्री माताजी १०
- राख बनी औषधि : श्र.मुनि विशोकसागर जी ११
- तेरी दीक्षा अवश्य होगी : क्षुल्लि. विज्ञप्तिश्री माता ११
- निमित्त ज्ञान से की भविष्यवाणी : श्रमण मुनि विवर्धन सागर जी महाराज १२
- आचार्यश्री को विन्याजंलि अर्पित १३
- प्रार्थना : क्षल्लिकाश्री सुश्रेयमति माता जी १७
- ३७वें मुनिदीक्षा पर भक्तों के हृद्योद्गार १८
- **भक्तों का हृदयाभिनंदन-**
- विमल के पास जाना : चिन्तामणि वज २१
- सत्संगति : श्रमण मुनि संस्कार सागर २४
- सौहार्द्रता अपनायें : समयोचित शिक्षा से साभार २५

❖ **कविताएँ**
- सच्चे साधक : आ.श्री विशुद्धसागर जी २५
- विरागसागर नाम हमें.... : पं.विजेन्द्र कुमार जैन २६

❖ **समाचार** २९

❖ **विराग वर्ग पहेली** ५०

संपादकीय

प्राचीनतम-जैन धर्म

इंजी. आनन्द कुमार जैन

पश्चिमी देशों के संदर्भ में यदि हम देखें तो पूर्वी क्षेत्र का द्वार भारत से प्रारंभ होता है जिसमें पाकिस्तान तिब्बत, मंगोलिया, इन्डोनेशिया, चीन, मलेशिया आदि देश पूर्वी क्षेत्र में आते हैं। भारतवर्ष की अति पावन भूमि मगध बंग और कलिंग रही है। श्रमण संस्कृति की पताका यहीं से विश्व में फैली है। बंगभूमि, बंगाल प्राचीन काल से ही जैन धर्म का प्रमुख गढ़ रही है। २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का प्रभाव बंगाल में बहुत प्रवल था। मैगस्थनीज के वर्णनों में भी बंग प्रदेश का एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में वर्णन मिलता है। उड़ीसा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण खोज जो चीन के इतिहास और पुराणों से मिली है वह बहुत महत्वपूर्ण है। उड़ीसा के सम्बलपुर में सबसे प्रथम जगन्नाथ (ऋषभनाथ) की प्रतिमा को गौतम ने प्रतिष्ठत किया था। जिस समय अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया उस समय कलिंग के राजा क्षेमराज थे जो भगवान महावीर के समय वैशाली प्रमुख भगवान महावीर के परम उपासक चेटक वंश के थे। यह वर्णन हमें हिमवन्त पट्टावली में मिलता है। उन्हीं के वंशज उड़ीसा के सम्राट महामेघवाहन खारवेल ने सिर्फ कलिंग जिन को मगध से लाकर प्रतिष्ठित ही नहीं किया बल्कि उदयगिरि और खण्डगिरि में मंदिर और गुफाओं का निर्माण कराया। तिब्बत, चीन, नेपाल एवं भारत के उत्तर पूर्वी इलाकों में नाग जाति का वर्चस्व रहा है। अष्टापद क्षेत्र में सगर राजा और भागीरथ के प्रकरण में नाग वंशियों का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर की माँ त्रिशला लिच्छवी वंश की थी। मनु स्मृति में भी इन्हें व्रात्य क्षत्रिय कहा गया है। मौर्यकाल में सम्राट अशोक का पुत्र कुणाल जो अपनी विमाता के षड़यन्त्र के कारण अंधा हो गया था। चीन में बड़े-बड़े वौद्ध विहारों के मुख्य हाल का नाम महावीर हाल देखने को मिलता है। चीन में बड़े-बड़े बौद्ध विहारों के बाहर जो बौद्ध होटल हैं उनमें शुद्ध शाकाहारी भोजन मिलता है। प्याज और लहसुन वर्जित है एवं रात को खाना नहीं मिलता है। बर्मा में बाहुवली (बाहूवली) पगोड़ा है। जैनियों में जो अष्टमंगल की परम्परा है लगभग वहीं हमें चीन, तिब्बत और मंगोलिया में भी मिलती है। जैन संस्कृति या हमारी आदि संस्कृति का उद्भव इस पूर्वी क्षेत्र से हुआ और यहीं से पूरे विश्व में फैला। क्या कारण है कि यह महान आदि संस्कृति जो कभी विश्व में फैली थी वह आज सिमटकर रह गयी है। इस पर गहन शोध की आवश्यकता है।

परमपूज्य गणाचार्य १००८ श्री विरागसागर जी महाराज ने बताया कि एक बार मात्र इसी विषय पर सेमीनार हुआ था कि प्रतिमा विज्ञान का शुभारंभ कब से हुआ तो किसी ने ५वीं शताब्दी, किसी ने ७वीं शताब्दी तो किसी ने दो हजार वर्ष पूर्व किसी ने ५००० वर्ष पूर्व से कहा, इससे आगे कोई भी नहीं बढ़ पा रहा था लेकिन जब जैन धर्म पर बात आई तो हमारे यहाँ अकृतिम चैत्यालयों का व्याख्यान है जो किसी के द्वारा बनाये नहीं गये वे शाश्वत हैं, अनादिकाल से हैं और अनंत काल तक रहेंगे इस बात को सुन सभी ने जैन दर्शन को श्रद्धा भक्ति से स्वीकार किया। सत्य तो यह है धर्म कोई भी क्यों न हो, दर्शन कोई भी हो और उनमें भक्ति, पूजा के तरीके भी अपने-अपने अलग हों, लेकिन हर भारतीय श्रद्धा से जुड़ा हुआ है, किसी न किसी रूप में उसकी भगवान के प्रति आस्था है और यह आस्था ही मोक्षमार्ग पर बढ़ने का सबसे बड़ा संकेत देती है। भगवान महावीर स्वामी अपने लिये जैनधर्म का सटीक सिद्धान्त उद्घोषित करते हैं- हर आत्मा के अन्दर में परमात्मा बनने की शक्ति छिपी हुई है यदि वह सम्यक पुरुषार्थ करे तो वह भी परमात्मा बन सकता है लेकिन परमात्मा बनने के पूर्व वैराग्य होना आवश्यक है। ध्यान रखिये धर्म उम्र को नहीं देखता धर्म तो व्यक्ति के अंत:करण से उत्पन्न होता है। कोई नहीं सोच सकता कब किसको वैराग्य हो जाये। जैन दर्शन कहता है विरक्ति केवल विषय वासना से नहीं अपितु उसे बढ़ाने वाले धन दौलत से भी विरक्ति होना चाहिए।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार ४.११.१९८४)

।। ऊँ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।।

हे आत्मन्! संसारी भव्यगण आत्मशोधन के लिये वीतराग सर्वज्ञ हितोपदेश देवाधिदेव प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग द्रव्यानुयोग सिद्धान्त शास्त्र आचार्य उपाध्याय साधु निर्ग्रन्थक गुरु की देशनानुसार अपने जीवन की साक्षत् आत्म तत्व की भावना जाग्रत करने के लिए स्वाध्याय और कषायों की हानि और परमवीतरागता की प्राप्ति में पर वैराग्यवान होकर निरीहवृत्ति से व्रत संयम धारण करना परमावश्यक ध्यान द्वारा कर्मों को निजीर्ण करने के लिए अपनी वीतरागता की पूर्ण सहाय हो सकेगी उसके लिए पूर्व व्रतों का करना ही श्रेयोमार्ग है, जितने भी व्रत संयम हैं वे सर्व प्रमाद को हटाने के लिए कार्यकारी हैं और आत्म शोधन के लिए जीवन्युक्त बनने में सहायक हैं अत: हे विमलात्मन् तुम अपनी वीतरागदेव सिद्धन्त शास्त्र, निर्ग्रन्थ गुरु की सच्चि श्राद्धान्यित होकर गुणों का परम धन कमाते हुए संसारार्णव से निकलने का उपाय व्रत संयम पूर्ण भावना को जाग्रत करना ही श्रेयोमार्ग है जिससे जीवन्मुक्त परमात्मा तथा अविनाशी अविकार सिद्ध परमात्मा बनकर सहज सुख का स्वामी सहजानंद, ज्ञानानंद, नित्यानंद आनंद धन परमात्मा सदैव को सुखी परमात्मा हो जाओगे।

जिनोपदेश (गुरु)

संकलन- समाधिस्थ मुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

विज्ञातगुरु शुद्धिः सः, विशेषात्पिप्रिये तराम्।
माणिक्यस्य हि लब्धस्य शुद्धे र्मोदो विशेषतः ।। क्ष.चू.२/२९

अर्थ- मणि के मिल जाने मात्र से ही खुशी हुआ करती है और जब उसकी पूर्ण अच्छाई का परिज्ञान हो जाता है तब तो उसकी खुशी का पार नहीं रहता। उसी प्रकार गुरु का होना ही आनंद प्रद होता है किंतु उसकी उत्तमता के निर्णीत हो जाने पर तो आनंद का कहना ही क्या?

रत्नत्रय विशुद्धः सन्, पात्रस्नेही परार्थकृत।
परिपालितधर्मो हि, भवाब्धेस्तारको गुरुः ।। क्ष.चू. २/३०

अर्थ- जो रत्नत्रय से विशुद्ध, सज्जन, पात्रप्रेमी, परोपकारी, धर्मरक्षक और जगतारक होता है वही यथार्थ गुरु होता है।

गुरु भक्तिः सती मुक्त्यै, क्षुद्रं किं वा न साधयेत्।
तिलोकी मूल्यरत्नेन दुर्लभः किं तुबोत्करः ।। क्ष.चू. २/३२

अर्थ- उत्तम गुरु भक्ति से मुक्ति की प्राप्ति होती है, तब तुच्छ वस्तु की क्या सिद्धि नहीं होगी? अर्थात् सर्व कार्यों को सिद्ध कर सकती है। जैसे- जिस रत्न के द्वारा तीनों लोक खरीदे जा सकते हैं उस रत्न से भूसे का ढेर प्राप्त करना क्या दुर्लभ है?

गर्भाधानक्रियामात्र न्यूनौ हि पितरौ गुरु ।। क्ष.चू. २/५९

अर्थ- गुरु गर्भधारण की क्रियामात्र से रहित माता पिता ही है।

आराधनैकसम्पाद्या, विद्या न ह्यन्यसाधना ।। क्ष.चू. ७/७४

अर्थ- गुरु की सेवा सुश्रुषा करने से ही विद्या की प्राप्ति होती है, अन्य प्रकार नहीं।

गुरुणां यदि संसर्गो न स्यान्न स्याद् गुणार्जनम्।
विना गुणार्जनात् क्वास्य जन्तोः सफलजन्मता ।। आ.पु.प्र.

अर्थ- यदि संसार में गुरुओं की संगति न हो तो गुणों की प्राप्ति नहीं हो सकती और गुणों की प्राप्ति के बिना इस जीव के जन्म की सफलता कहाँ हो सकती है।

मेरे गुरु आज भी मेरे पास है

प्रवचनकार -परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

संस्मरण श्रद्धा को मजबूत बनाते हैं। संस्मरण कृतज्ञता को जन्म देते हैं। संस्मरण नई पीढ़ी को नयी-नयी शिक्षायें देते हैं संस्मरण हमारे जीवन में संबल का हेतु बनते हैं। संस्मरण हमें नई शक्ति, नई ऊर्जा देते हैं। यही कारण है हम समय-समय पर अपने गुरुओं को याद करते रहते हैं उनका गुणगान करते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव कितने चमत्कारी थे कितने अतिशयकारी थे कैसा उनका निमित्त ज्ञान था ये आप सभी अच्छी तरह से जानते हैं। महापुरुषों के लक्षण पालने में ही दिखने लगते हैं इसी सूक्ति के अनुरूप उनकी गृहस्थावस्था से ही ऐसी घटनाएँ घटती गई। कहीं उन्होंने साईकिल से सम्मेद शिखर की यात्रा की तो कहीं राख को दबा का रूप दे दिया। कहीं उन्होंने आचार्य महाराज को आम का मौसम न होने पर भी आम से पड़गाया तो कहीं मुरैना स्कूल में राष्ट्रपिता महात्मागांधी को १८ प्रकार का नमक बनाकर भेट दे स्कूल का नाम रोशन किया था।

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज आचार्य शांतिसागर जी महाराज से शूद्रजल का त्याग लिया, जनेऊ धारण किया। आचार्य वीरसागर जी महाराज से प्रतिमाएँ ली और आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज से उन्होंने क्षुल्लक, ऐलक तथा मुनिदीक्षा धारण की।

वे बचपन से ही ओजस्वी देशशक्ति सम्पन्न थे जब वो ब्रह्मचारी अवस्था में आचार्य शांतिसागर जी महाराज के शिष्य आचार्य सुधर्म सागर जी महाराज के पास दर्शन करने गये तो उनका विहार चल रहा था कहीं विश्राम का स्थान नहीं था इसलिए वे एक वृक्ष के नीचे जाकर लेट गये नींद भी उन्हें आ गई। उसी समय एक बहुत बड़ा काला नाग आया और फण फैलाकर उनके सिर के पास बैठ गया। उसी समय आचार्य सुधर्मसागर जी लघुशंका के लिये कमरे से बाहर निकले उन्होंने उस सर्प को उनके सिर पर फण फैलाये देखा तो विस्मित हो गये और नेमिचंद जी को सावधान किया उनके जागते ही सर्प वहाँ से चला गया। उस समय आ. सुधर्मसागर जी महाराज ने कहा- आज नाग तुम्हारे ऊपर फण फैलाकर बैठा था। निश्चित ही तुम भविष्य में ऐसे संत बनोंगे कि नागेन्द्र भी तुम्हारी रक्षा करेगा। सहायता करेगा। पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज की विशेषताएँ तो देश के कौने-कौने में रहने वाले उनके भक्त अच्छी तरह जानते हैं। जिनके जीवन में गुरुदेव विमलसागर जी महाराज के आशीर्वाद से आज भी सुख-शांति है।

उनकी चर्या, साधना एक ऐसी थी जो स्वत: ही अतिशयों को उत्पन्न करती थी। परम पूज्य आचार्य धर्मसागर जी महाराज कहते थे साधु वही हो सकता है जो निद्राजयी, (निद्रादृढ़) आहार दृढ़ आसन दृढ़ हो वही साधु होता है। आचार्य विमलासागर जी महाराज केवल दो घण्टे सोते थे लेकिन उस दो घण्टे की नींद में कितने ही बाजे बजा दीजिए तो भी उन्हें कोई फरक नहीं पड़ता था।

हमारे संघ में बाहुवली सागर महाराज सबसे शक्तिशाली माने जाते थे। पहलवान की तरह ही वे दिखते थे। जब सभी लोग वैय्यावृत्ति करके चले जाते थे उसके बाद बाहुवली सागर महाराज आ.श्री की वैय्यावृत्ति करने आते थे और पूरी ताकत से वैय्यावृत्ति करते थे तो भी महाराज की नींद में कोई अंतर नहीं आता था। ११.०० बजे से उठकर वे विभिन्न प्रकार की मालाओं से विभिन्न मंत्रों की जाप्य किया करते थे। वे यंत्रों का जैसा पाठ करते थे बैठा पाठ करते आज तक मैंने किसी को नहीं देखा। वे अपने ध्यान में बैठकर संख्या बोलते जाते थे। वे अपने मस्तिष्क पर सम्मेद शिखर जी का ध्यान करते थे गिरनार जी आदि सभी क्षेत्रों की वंदना वे अपने ही शरीर पर करते थे।

एक दिन जब हम उनके निकट गये तो हमने देखा आचार्य महाराज दोनों हाथ ऊपर करके बैठे हैं। बहुत देर तक मैं देखता रहा। ध्यान समाप्त होने के बाद मैंने पूछा- आचार्य श्री आप किसका ध्यान कर रहे थे? उन्होंने कहा- मेरु पर्वत का ध्यान कर रहा था और विचार कर रहा था इसमें चार बन हैं उसमें चार-चार चैत्यालय हैं उनमें भगवान विराजमान हैं उनकी वंदना कर रहा था।

एक दिन मैंने उन्हें देखा कि वे घुटने टेक कर दोनों हाथों को फैलाये बैठे हैं (जैसे मुस्लिम लोग निमाज पढ़ते हैं) मुझे ऐसा ही लगा मैंने पूछा- आप क्या कर रहे थे? बोले- दोनों हाथों के अंदर मैं सिद्धशिला को देख रहा था। जीवन रेखा

से जुड़ी हुई जो रेखायें हैं उसका आकार सिद्धशिला जैसा बन जाता है और अपनी दोनों हाथ की अंगुलियों पर चौबीस तीर्थंकर भगवान का ध्यान कर रहा था।

एक दिन मैंने देखा कि पूज्य गुरुदेव हाथ को ऊपर करके बैठे हैं मैने कहा- आचार्यश्री यह कौन सी मुद्रा है बोले- सुमेरु पर्वत पर पाडुकशिला होती है उस पर मैं तीर्थंकर बालक का अभिषेक देख रहा हूँ। एक दिन महाराज हाथों को देख रहे थे मैने सोचा आचार्य श्री के हाथों में कुछ लिखा होगा उसे पढ़ रहे हैं गौर से देखा तो उनके हाथ में कुछ भी नहीं लिखा था। मैंने पूछा- तो उन्होंने कहा- पांच परमेष्ठी होते हैं उनकी एक-एक अंगुली पर स्थापना कर मैं ध्यान कर रहा था।

आचार्य श्री के जो ध्यान के तरीके थे व अपने आप में अलग ही थे। आज तक मैंने किसी को ऐसी मुद्राओं में ध्यान करते नहीं देखा।

पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज की प्रत्येक क्रिया अपने आपमें बेजोड़ थी चाहे वो ध्यान हो, या मंत्र जाप्य हो अथवा पाठ आदि। जब वो मंत्रों की जाप्य करते थे तो चौबीसों तीर्थंकर भगवान की जाप्य आनुपूर्वी से करते थे कभी पूर्वानुपूर्वी से कभी पश्चातानुपूर्वी से कभी याथा तथ्यानुपूर्वी से करते थे फिर कभी भूलते नहीं थे यह उनकी विशेषता थी। उनके पास जितनी भी पुस्तकें रहती थी प्रतिदिन उसका पाठ करते थे। उनका कहना था जिस पुस्तक को हम पढ़ते नहीं है वह एकमात्र परिग्रह ही है अत: उतनी ही पुस्तकें रखें जिन्हें हम रोज पढ़ सकें।

आज पूज्य आचार्य श्री की समाधि को २५ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं लेकिन फिर भी मेरा मन उन्हें आज भी अपने करीब देखता है गुरु शरीर से भले शिष्य से दूर हो जायें लेकिन शिष्य का मन एकपल भी उनसे दूर नहीं होता सदैव उनके चरणों में रहता है। मेरे गुरु अभी भी मुझे पूर्व की तरह ही संबल साहस देते हैं स्वप्न में आकर मार्ग दर्शन देते हैं। आशीर्वाद देते हैं इसलिए मुझे वो कमी अपने से दूर नहीं लगते। अंत में गुरुदेव से यही प्रार्थना है कि गुरुदेव जब तक मेरा मोक्ष न हो तब तक इसी प्रकार आप मुझे मोक्ष की राह पर लगायें रखना ऐसी भावना के साथ बारम्बार नमोस्तु-३।

योग शरणम् गच्छामि

श्रमणी आर्यिका पुनीत चैतन्यमतिश्री माता जी

योग एक पूर्ण विज्ञान है, पूर्ण जीवन शैली है, एक पूर्ण चिकित्सा-पद्धति है एवं पूर्ण अध्यात्म विद्या है। योग की लोकप्रियता का रहस्य यह है कि यह लिंग, जाति, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र एवं भाषा भेद की संकीर्णताओं से कभी आबद्ध नहीं रहा है। साधक, चिंतक, वैरागी, अभ्यासी, ब्रह्मचारी, गृहस्थ कोई भी इसका सान्निध्य प्राप्त कर लाभान्वित हो सकता है। व्यक्ति के निर्माण और उत्थान में ही नहीं बल्कि परिवार समाज राष्ट्र और विश्व के चहुमुँखी विकास में भी यह उपयोगी सिद्ध हुआ है। आधुनिक मानव समाज जिस तनाव, अशान्ति आतंकवाद अभाव एवं अज्ञान का शिकार है, उसका समाधान केवल योग के पास है। मनुष्य को सकारात्मक चिन्तन के प्रशस्त पथ पर लाने की एक अद्भूत विद्या है, जिसे करोड़ों वर्ष पूर्व भारत के प्रज्ञावान ऋषि मुनियों ने आविष्कृत किया था इसी अष्टांग योग का उपदेश और अभ्यास पूज्य आचार्य स्वामी जी अपने प्रवचन एवं योग प्रशिक्षण में करते कराते हैं। उसका निष्कर्ष है कि स्वस्थ व्यक्ति सुखी समाज का निर्माण केवल योग की शरण में आकर ही हो सकता है।

यह कितना आश्चर्य का विषय है कि दो सौ वर्ष पुरानी ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में फंसकर हम अपना आर्थिक शारीरिक एवं मानसिक शोषण कराने को सहज में तैयार हो जाते हैं, लेकिन करोड़ों वर्षों से भी पुरानी उस योगविद्या के प्रति उदासीन रहते हैं, अनभिज्ञ रहते हैं, जो एक प्रमाणिक ही नहीं, वरन नि:शुल्क चिकित्सा पद्धति भी है।

आशा है, आपके निरन्तर सहयोग, सद्भाव, श्रद्धा एवं समर्पण से देव संस्कृति का अभियान निरंतर उत्कर्ष की ओर गतिशील होता रहेगा।

सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जागरण के इस पुनीत अनुष्ठान में हमें आपका प्रेम एवं स्नेह उसी तरह सतत प्राप्त होता रहेगा ऐसा हमें विश्वास है।

शेष अगले अंक में देखें.....

गुरुभक्ति से टलते हैं संकट

श्रमणाचार्य सुबलसागर जी महाराज

जिसके हृदय में गुरु वास करते हैं दुनियाँ की कोई भी ताकत उसे नीचा नहीं दिखा सकती। गुरुओं के प्रति जो हमारी श्रद्धा होती है आस्था होती है वह दृढ़ हो वह संसार के किसी भी कौने में चला जाये कभी परास्त नहीं होता बलहीन नहीं हेाता है। लेकिन जिसकी श्रद्धा में खोट है वह हर जगह चोट खाता है।

प्यारे बन्धुओ! आज गुरुदेव सन्मतिसागर जी का दीक्षा दिवस है। उनका अथवा किसी का भी दीक्षा दिवस हम मनायें उससे होता क्या है केवल जोर-जोर से जयकार लगाने से कुछ होने वाला नहीं है केवल उनके नाम का अर्ध्य चढ़ाने से कुछ होने वाला नहीं है। उनके नाम के अर्ध्य और उनकी जयकारा ये तो बहुत लोग लगा सकते हैं लेकिन उनके प्रति जो श्रद्धा रखना चाहिए वो नहीं रख पाते हैं। जो उनके संयम के प्रति, उनके चारित्र के प्रति, उनके आचरण के प्रति श्रद्धा रखते हैं उन्हें ही कुछ प्राप्त होता है। जो श्रद्धा से रहित होकर मात्र जयकारा लगाते हैं उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

प्यारे बन्धुओ! आचार्य गुरुदेव के हर एक शब्द आज मेरे हृदय में गूँज रहे हैं। अपना सौभाग्य कहूँ या दुर्भाग्य कहूँ पता नहीं मेरा सौभाग्य रहा या दुर्भाग्य ये मैं नहीं जानता हूँ कि आचार्य गुरुदेव का सान्निध्य केवल मुझे १७ दिन मिला। अगर उनके चरणों में नहीं पहुँचता तो शायद आज मैं यहाँ नहीं होता यह मेरा सौभाग्य है। और गुरुदेव १७ दिन के अंदर छोड़कर चले गये। ये मेरा दुर्भाग्य है। प्यारे बन्धुओ! जब जीवन में पहली बार उनके दर्शन किये। २४.११.२०१० जब मैं उनके चरणों में पहुँचा तो मुझे लगा बस मेरी जो मंजिल थी वह मुझे प्राप्त हो गई। मैं शाम को ६.००बजे उनके पास पहुँचा उन्होंने पूंछा कहाँ से आये हो मैंने बता दिया। चर्या के कठोर और वात्सल्य के धनी अगर कोई था तो आचार्य सन्मति सागर जी महाराज थे। मैं २० मिनट उनके पास बैठा रहा उस समय मेरे मन में एक प्यास लगी थी। मुझे लग रहा था मेरी प्यास यहाँ बुझ सकती है यदि इन चरणों को छोड़कर कहीं चला गया तो शायद कहीं मुझे दूसरा स्थान मिले या न मिले पता नहीं।

उस दिन रात्रिभर मुझे नींद नहीं आई अपने मन के भावों को मैं कैसे गुरु के चरणों में रखूँ समझ में नहीं आ रहा था क्योंकि मैंने जीवन में पहली बार उनके दर्शन किये थे। दूसरे दिन मैं आचार्य सौभाग्यसागर जी के माध्यम से उनके पास पहुँचा और शाम को ६.०० बजे मैंने उनसे कहा- हे गुरुदेव मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ। जैसे ही मैंने कहा- तो उन्होंने ऊपर से नीचे तक ऐसी गहरी दृष्टि से मुझे देखा जैसे कोई माणिक का पारखी देखता है। उन्होंने सारा परिचय लिया बहुत सारे प्रश्न उन्होंने किये सारे प्रश्नों के उत्तर दिये। सारी चर्चायें हो गई तो उन्होंने दीक्षा की डेट फाइनल हो गई तब मैंने उनसे एक निवेदन किया कि गुरुदेव मेरे गले में एक गांठ है डॉक्टर्स की दवाईयाँ खाना पड़ती है एक बार ऑपरेशन हो चुका है हो सकता है फिर से ऑपरेशन कराना पड़े। अब क्या करें आप आज्ञा करें। गुरुदेव आधे मिनट मौन रहे फिर बोले श्रद्धान है मैने कहा- है बोले अंग्रेजी दवाई का त्याग करो मैंने कहा किया। ७ प्रतिमा ले लो मैंने कहा- ली, जब गुरु बोल रहे हैं तो क्या शंका करना क्या प्रश्न उठाना, कि क्या करें क्या होगा। अरे! क्या होगा कैसे होगा गुरु जाने उनके चरणों में यदि संयम धारण कर समाधि हो जाये वो श्रेष्ठ है लेकिन संयम का मौका छोड़ना श्रेष्ठ नहीं है।

भिण्ड मैं बिनौली जिस दिन निकल रही थी उस दिन उस गांठ में इतनी वेदना थी लेकिन उसे किसी से कहने में डर लग रहा था क्योंकि दीक्षा में अवरोध खड़ा न हो जाये लेकिन सौभाग्य था ७ दिसम्बर २०१० आचार्य महाराज ने दीक्षा के जैसे ही संस्कार किये उसके बाद २ महीने नहीं हुए वो गांठ कहाँ गई मुझे नहीं मालूम।

७ दिसम्बर को मेरी दीक्षा हुई ९ दिसम्बर को और उसके बाद जिन संघों ने भी वहाँ से विहार किया उन्हें आचार्य महाराज ने कुछ दिन आस-पास रहने की आज्ञा दी। १० दिसम्बर को गुरुदेव का भी विहार मठ की ओर हो गया। २० दिसम्बर को मठ से अदगांव की ओर विहार चल रहा था रास्ते में उनका शरीर शिथिल पड़ गया रास्ते में कई जगह बैठे तब पहुँचे दोपहर में चतुर्दशी का प्रतिक्रमण होना था आचार्य महाराज का उपवास था। १०० से प्रतिक्रमण होना था गुरुदेव का रूम अंदर से बंद था संघ पहुँचा गेट खट्खटाया निवेदन किया लेकिन नहीं खुला प्रतिक्रमण की आवाज आई आचार्य

महाराज अकेले प्रतिक्रमण पढ़ रहे थे किन्हीं महाराजों ने लकड़ी आदि डालकर कुंढी खोली और अंदर सारा संघ बैठ गया। प्रतिक्रमण पूर्ण हुआ फिर किन्हीं महाराज ने पूछा- आचार्य महाराज आज आपने अकेले प्रतिक्रमण चालू कर दिया। तो बोले- क्या करते उठने की सामर्थ्य ही नहीं थी इसलिए बैठे रहे आप लोगों ने सुन लिया यह अच्छा किया।

उठने की सामर्थ्य नहीं थी फिर भी ३.३० बजे बोले विहार करो। ओह! धन्य हो, सामर्थ्य नहीं थी फिर भी वचन दे दिया था कि विहार होगा और विहार हो गया। रास्ते में चल नही पा रहे थे फिर भी चले। यदि चर्या और अनुशासन किसी का देखना हो तो, अब क्या देखना अब तो वे हमारे बीच में हैं ही नहीं हाँ, दिल में हृदय में जरूर हैं हृदय से उन्हें कोई निकाल नहीं सकता। बहुत सी ऐसी बाते हैं जिन्हें मैं बता रहूँ लेकिन समय नहीं है। जो कोई श्रद्धा से नाम लेता है उसके सारे संकट अपने आप टल जाते हैं।

जब मेरा सीकर में प्रवेश हुआ तो रात्रि में ही १०४ डिग्री बुखार चढ़ गया मैं अचेत पड़ा था डॉक्टर की कुछ समझ में नहीं आ रहा क्या करूँ। ३.०० बजे आचार्य महाराज स्वप्न में आये बोले मीठे में अमुक्त वस्तु ले लेना मैंने कहा- महाराज मीठे का त्याग है तो उन्होंने कहा- ठीक है आशीर्वाद है। सुबह घड़ी में १०.०० नहीं बजे कि मुझे पता ही नहीं चला कि मैं बीमार था कि नहीं। प्यारे बंधुओ! ऐसे गुरुओं के चरणों में मेरा शत् शत् नमन।

आज मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है कि गुरुदेव विरागसागर जी का संघ यहाँ विराजमान है। यह किसी दूसरे का नहीं मेरा संघ है। कई लोग पुहात करते हैं संघ को बांट देते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता सभी संघ हमारा है गुरुदेव हमारे है और हम उनके हैं। गुरुदेव से प्रार्थना है कि कल विशाल संघ का पिच्छिका परिवर्तन है वह इसी मंच से हो तो बहुत अच्छा होगा। मुझे भी बहुत खुशी होगी।

आचार्य सन्मति सागर जी जैसे तपस्वी थे वैसे ही उनकी तपस्या की चर्चा भी सभी संघों में होती थी। उन्होंने सारे संसार को बता दिया कि तप करने से क्या होता है। मैंने उनके प्रथम दर्शन दीक्षा के पूर्व सम्मेद शिखर जी सिद्धक्षेत्र की वंदना करने के बाद राजग्रही में आचार्य श्री विमलसागर जी का चातुर्मास हो रहा था वहाँ हम गये उनके साथ पावापुर गये उस समय भी और कलकत्ता में भी बड़े निकट से आचार्य सन्मतिसागर जी को देखा उन्हें आहार दान भी दिया उस समय आचार्य सन्मति सागर जी केवल उबला परबल लेते थे। देखकर ऐसा लगता था कि शरीर कैसे टिका है। अंत में उन्होंने ९ वर्ष तक केवल छाछ पानी लिया जिसे सुनते ही मेरा मस्तक श्रद्धा से नम्रीभूत हो जाता है।

आज उनका दीक्षा दिवस है। उनके गुरु भी आचार्य विमलसागर जी थे और हमारे पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी के दीक्षा गुरु भी आचार्य विमलसागर जी थे। यदि हमारे दीक्षा संस्कार करने वाले गुरु निर्दोष निर्मल चर्यावान है तो शिष्य का जीवन भी वैसा ही बनता है।

हमारे गणाचार्य विरागसागर जी महाराज में तो आचार्य सन्मति सागर जी ने क्षुल्लक दीक्षा और आचार्य विमलसागर जी महाराज ने मुनिदीक्षा के संस्कार कर के अपने सारे गुण इनमें भर दिये है। आज आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज का दीक्षा दिवस तथा गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण दिवस है दोनों आचार्य भगवंतों को मेरा त्रय भक्ति पूर्वक नमोस्तु।

आचार्य विरागसागर जी का वात्सल्य अनूंठा ही है। जैसे आकाश में सूर्य होता है वैसे ही संतों में आचार्य विरागसागर जी महाराज है।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

अध्यात्म हृदय से उपजता है मन से नहीं

आचार्य विनम्रसागर जी

जीवन को चलाने वाले हमारे पास दो ड्राईवर हैं एक योग दूसरा उपयोग। शरीर एक हमारी जिन्दगी की गाड़ी है। गाड़ी भी दो तरीकों से चलती है एक तब, जब हम ड्राईवर रखते हैं, एक तब, जब हम स्वयं ड्राइव करते हैं। ऐसा ही अध्यात्म और अनध्यात्म है हमारे जीवन के रथ के दो ड्राईवर हैं। जब हम मन-वचन-काय से हटकर स्वयं ड्रावर करते हैं तो अध्यात्म कहलाता है और हम योग के आधीन हो जाते हैं तब अनध्यात्म पैदा होता है। जीवन की वास्तविकता और महाआनन्द आध्यात्मिकता में हैं। जो वास्तविकता में दुख है वह अज्ञानवश दु:ख महसूस होता है यही अधार्मिकता या अनध्यात्मिकता है। अध्यात्म को हर आदमी पाना चाहता है लेकिन मन-वचन-काय की युक्तियों से पार नहीं होना चाहता, स्वयं ड्राइव करना नहीं चाहता यह बात तर्कहीन नज़र आती है। दूसरों से अपना काम कराकर स्वयं को अनुभवी सिद्ध करना गलत है ऐसी गलती करके स्वयं को सत्य समझना महागलत है। वह अध्यात्म हृदय की धारा से निकलता है यदि हृदय हिमालय है तो अध्यात्म गंगा है अत: हृदय से अध्यात्म उपजता है मन से नहीं।

स्व- संवदेन अध्यात्म की नींव है भोग विलास स्व-संवेदन नहीं विषवेदन है जब कभी कोई वस्तु पाकर इन्द्रिय की प्रसन्नता को जाहिर करने के लिए चेतन खुश होता है तो समझना चाहिए यह अध्यात्म की खुशी नहीं। अध्यात्म की खुशी को आत्मानन्द से ही व्यक्त किया जा सकता है। वस्तु आनन्द से नहीं यदि पर वस्तु के माध्यम से आनन्द आता है तो आनन्द भी पराया है। हृदय वह केन्द्र बिन्दु है जहाँ से आनन्द के रास्ते मंजिल की ओर फूटते हैं हृदय वह फव्बारा है जहाँ से स्वभाव की धाराएँ निकलती हैं और देखने वालों को आनन्दित करती है। हृदय वह गुलशन है जहाँ आनन्द की खुश्बू के कई पेड़ लगते हैं और उनमें फूल खिलकर महकते हैं। हृदय वह समन्दर है जहाँ आनन्द की खुश्बू के कई पेड़ लगते हैं और उनमें फूल खिलकर महकते हैं। हृदय वह समन्दर है जहाँ पर सभी आनन्दित नदियों का संगम है हृदय वह तीर्थ है जहाँ सारे तीर्थ समा जाते हैं। हृदय से जब भी कोई आवाज आती है तो सारा शरीर रोमाचित हो उठता है शरीर का एक-एक अंग पुलकित होकर विस्तृत होने लगता है। हृदय की आवाज कोई आम आदमी की आवाज नहीं वह अध्यात्म से लबालब भरे परमात्मा की आवाज है। यदि हृदय कमल न होता तो परमात्मा को पैदा होने का स्थान भी न होता जिनके हृदय नहीं होता वहाँ परमात्मा प्रकट भी नहीं होता। अत: परमात्मा की लहर पाने के लिए अध्यात्म पैदा करना जरूरी है वह हृदय को निर्मल बनाता है।

मायाचारी कायरता का प्रतीक

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

किसी जंगल में गधों का एक समूह था, एक बार एक गधे को जंगल में किसी मृत शेर की खाल मिल गई और उस गधे ने उस खाल को ओढ़ लिया। उसने सोचा अब ठीक रहा, मैं सारे गधों के समूह पर शासन करूँगा और वह उस खाल को पहिन कर अपने समूह में रहने लगा। एक दिन वह अपने समूह के साथ जंगल गया तो ऊपर पहाड़ की चोटी पर एक शेर खड़ा था, उसने जब देखा कि मेरा भाई इन गधों के बीच में कैसे रह रहा है ? वह सोचता है कि अगर यह शेर होगा तो मेरे पास आ जायेगा और नहीं होगा तो चला जायेगा क्योंकि वह जानता था कि मेरा भाई कायर नहीं हो सकता है। और वह उस पाहड़ की चोटी पर से एक दहाड़ लगाता है कि शेर के रूप में उपस्थित गधा उस दहाड़ को सुन कर भागता है और सुरक्षा की खोज में उसकी खाल निकल जाती है। जिससे सभी लोग उसे पहिचान जाते हैं। उसका भेद खुल जाता है जिसके कारण उसे समूह के बीच अपमानित होना पड़ता है। अत: कायर व्यक्ति ही मायाचारी करता है वीर नहीं।

राख बनी औषधि

श्रमण मुनि विशोकसागर जी महाराज

सुनो भक्तों तुम्हें हम आज दिल की बात बतलायें,
हमें गुरुदेव मिल जायें तो सारे तीर्थ मिल जाये।
शिखर जी के नजारे एक पल में हमको हो जाते,
गुरु जो मुस्कुरा देते तो पारसनाथ मिल जाते।।

आचार्य विमलसागर जी महाराज एक बहुत बड़े संत थे। पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज उनके विषय में बताते हैं कि आचार्य विमलसागर जी जब आचार्य अवस्था में थे तब तो उनके अंदर अनेकों गुण अतिशय, ऋद्धि-सिद्धि थी ही किन्तु जब वे गृहस्थावस्था में पण्डित जी कहे जाते थे तब भी अनेकों ऋद्धियाँ उनमें थी।

आचार्यश्री ने बताया था कि जब वे पण्डित अवस्था में थे तो एक दिन वे भोजन बना रहे थे उस समय वे शुद्ध भोजन अपने हाथ से बनाते थे गैस भी उस समय नहीं थी वे चूल्हें पर भोजन बना रहे थे। उस दिन किसी कार्य से भोजन बनाने में वे लेट हो गये थे। लकड़ी भी गीली थी इसलिए जल नहीं रही थी बहुत धुंआ हो रहा था जिसके कारण पण्डित जी का चेहरा भी लाल हो गया था। वे परेशान थे लकड़ी जला-जलाकर फिर भी चूल्हा नहीं जल रहा था। उसी समय एक महिला उनके पास आ गई उसने कहा- पण्डित जी मेरा बच्चा बहुत बीमार है आज रात भर वह रोता ही रहा है न स्वयं सोया न हम लोगों को सोने दिया। सुबह से सभी डॉक्टर को भी दिखा लिया लेकिन वह चुप ही नहीं हो रहा छोटा है तकलीफ भी नहीं बता सकता हम तो परेशान हो गये। आपका नाम बहुत सुना है आप ही कोई दबा दे दीजिए। मेरा बच्चा ठीक हो जाये।

पण्डित जी बोले- मैं खाना बना रहा हूँ थोड़ी देर बाद आना। वह महिला बोली पण्डित जी जब तक तो पता नहीं क्या हो जायेगा। आप बस एक खुराक अभी दे दो ताकि उसे कुछ तो शांति मिले मैं तो दवा लेकर ही जाऊँगी। पण्डित जी शुद्ध वस्त्र में थे कुछ छू भी नहीं सकते थे। उन्होंने एक कागज में चूल्हें की राख रखकर कहा- लो ये एक पुड़िया है इसे पानी के साथ खिला दो। महिला खुश हो गई उसने जाकर बच्चे को वो पुड़िया पानी में घोलकर पिला दी बच्चा तुरन्त ठीक हो गया थोड़ी देर में वह महिला फिर आई बोली पण्डित जी बड़ी अच्छी दवा थी मेरा बच्चा एक ही पुड़िया में ठीक हो गया अब और दे दो। ये था आचार्य विमलसागर जी महाराज का चमत्कार। हमने आचार्यश्री जी महाराज को तो मात्र एक बार ही देखा था उस समय मैं छोटा था इसलिए ज्यादा नहीं पता लेकिन उनके विषय में जो भी सुना वह अपने पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज से सुना है। उनमें जैसा चमत्कार था वैसा ही चमत्कार हमने इनमें देखा है।

तेरी दीक्षा अवश्य होगी

क्षुल्लिका विज्ञप्तिश्री माता जी

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के हमने दो-तीन बार ही दर्शन किये। जब वो हमारे भावनगर में आये थे तब हमने चौका लगाया उस दिन आचार्य श्री तो नहीं लेकिन उपाध्याय भरत सागर जी महाराज को आहार कराने का हमें अवसर मिला।

दूसरे दिन आचार्यश्री को अतिशय क्षेत्र घोघा में हमने आहार दिया। आहार के बाद हम लोग आचार्य श्री के पास बेठे थे तभी अचानक दीक्षाओं की बात निकली आचार्यश्री ने हमसे बोला बेटा! तुम्हारे गाँव में से ११ दीक्षाएं होगी। हमने बोला- आचार्यश्री ११ दीक्षा अभी तक तो एक भी नहीं हुई तो आचार्यश्री बोले ११ नहीं तो ९ दीक्षाएँ तो अवश्य होगी और मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा- बेटा तेरी तो दीक्षा अवश्य होगी। ये था विमलसागर जी महाराज का निमित्त ज्ञान उनकी उस समय की बात आज शब्दशः सत्य हो चुकी है ऐसे आचार्यश्री को मेरा बारम्बार नमोस्तु-२।

निमित्त ज्ञान से की भविष्यवाणी

श्रमण मुनि विवर्धन सागर जी महाराज

क्षुल्लक पूर्णसागर जी कारंजा महा. से प्रथम बार कचनेर में विराजमान निमित्तज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के दर्शनार्थ पहुँचे-

दर्शन करते समय क्षुल्लक पूर्ण सागर जी- नमोस्तु आचार्यश्री हम कारंजा से आये हैं।

पू.आ. विमलसागर जी- हाँ, हाँ, मुझे पता है तुम दोनों दीक्षा लेने के लिए आये हो तुम्हारी दीक्षा मेरे ही हाथ से शीघ्र होगी।

क्षुल्लक पूर्णसागर जी- मेरे गुरु तो आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज है।

पू.आ.विमलसागर जी- मुझे पता है। सन्मतिसागर जी मेरा ही शिष्य है वह कुछ नहीं कहेगा।

दीक्षा निश्चित होने के पूर्व क्षुल्लक पूर्ण सागर जी- गुरुवर यदि योग ऐसा ही है तो मैं दीक्षा लेने को तैयार हूँ लेकिन मेरा प्रण है मैं गुरु से कभी छल नहीं करूंगा। अत: एक बात और कहना चाहता हूँ।

आ. विमलसागर जी- हाँ, हाँ, बेटा! बोलो क्या कहना है?

क्षु. पूर्ण सागर जी- संघ में शूद्रजल त्याग कराकर आहार लिया जाता है जिसके कारण अधिकांशत: वृद्ध लोग ही आहार दे पाते हैं मैं आलू, प्याज, रात्रि भोजन का कुछ समय का त्याग दिलाकर युवा पीड़ी को जोड़ना चाहता हूँ।

आचार्य विमलसागर जी- यह तो आ. आदिसागर, महावीर कीर्ति, शांतिसागर की परम्परा है अत: जरूरी है।

क्षुल्लक जी- तो अभी मुझे दीक्षा नहीं लेना कुछ समय बाद सोचेंगे।

दो-तीन दिनों बाद चित्राबाई जी- पूर्ण सागर जी सही तो कह रहे हैं आज आहार देने वाले कितने कम हैं। वह भी नियम तो दिलायेंगे बिना नियम के आहार नहीं लेगे। यह क्या कम है। फिर वर्तमान में नई पीड़ी को जोड़ना भी तो आवश्यक है।

उपाध्याय भरत सागर जी- हाँ, बात तो सही है। यह भी ठीक है कि क्षुल्लक जी दीक्षा लेकर संघ में रहेंगे तो शूद्रजल का त्याग करायेंगे।

क्षुल्लक जी- ऐसा करने पर लोग कहेंगे ये संघ में कुछ और रहते है और बाहर कुछ और अत: मैं स्पष्ट छूट लेना चाहूता हूँ।

उपाध्याय भरत सागर जी- चिंता मत करो कोई कुछ नहीं कहेगा।

चित्राबाई- आचार्य श्री! आप ही तो कह रहे थे कि क्षुल्लक जी दीक्षा लेकर बहुत बड़ी धर्म की प्रभावना करेंगे फिर इतना सोचना क्यों?

आ. विमलसागर जी- हाँ, यह बात तो है। तो ठीक है मंजूर है। जल्दी दीक्षा लो।

क्षुल्लक पूर्ण सागर जी - गुरुदेव एक बात और है।

आ. श्री जी - अब कौन सी बात है?

क्षुल्लक जी - संघ में २-३ बार अभिषेक देखने की परम्परा है मैं एक बार अभिषेक देखकर शेष समय अध्ययन में लगाना चाहता हूँ।

आ. श्री - एक बार तो देखोगे, ठीक है।

क्षुल्लक जी की मुनि दीक्षा ९ दिसम्बर १९८३ को सानंद संपन्न हुई उसके बाद परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज- आज मैं जिस शिष्य को दीक्षा दे रहा हूँ- ये मुनि विरागसागर जी के नाम से विख्यात होगे। इनसे धर्म की महती प्रभावना होगी, इनका संघ बहुत बड़ा होगा, ये बहुत शिष्यों को दीक्षा देंगे और आगे चलकर अपने समकालीन आचार्यों में इनका प्रधान स्थान रहेगा बहुत ख्याति प्राप्त करेंगे ऐसे शिष्य को दीक्षा देकर मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। आज से औंरगाबाद की सीमायें भी चारों दिशाओं में उन्नरोत्तर बढ़ती जायेगी।

प.पू. आचार्य विमलसागर जी महाराज की वही वाणी आज जन मानस की प्रत्यक्ष साक्षी के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है। धन्य हैं ऐसे गुरु और धन्य हैं परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज जैसे होनहार आदर्श शिष्य।

मार्मिक वाक्य

श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी

पूज्य गुरुदेव ने हम लोगों को मूलाचार ग्रंथ पढ़ाते समय बताया था **आइरिय पसापेण विज्जा मंताय सिज्झंति** अर्थात् आचार्यों के प्रसाद से विद्या और मंत्र की सहज ही सिद्धि हो जाया करती है।

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज की ऐसी अनुकंपा रही, ऐसा वात्सल्य रहा पूज्य गुरुदेव के प्रति, उनके वचन थे कि मुनि विरागसागर जी आगे चलकर मुझसे भी अधिक दीक्षा प्रदान करेंगे। जब एक आदर्श गुरु के वचन एक आर्दश शिष्य के लिये निकलते हैं तो निश्चित रूप से वाक्य सिद्धि को प्राप्त हो जाते हैं उसी का प्रतिफल है कि आज ४०० से अधिक पूज्य गुरुदेव के शिष्य और प्रशिष्य भारत में धर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज का पूज्य गुरुदेव पर असीम वात्सल्य था। जब भी गुरुदेव विरागसागर जी अपने गुरु विमलसागर जी के पास जाते थे तो आचार्य विमल सागर जी महाराज इतने खुश होते थे मानो काफी वर्षों बाद एक माँ अपने बेटे को पाकर खुश होती है। आचार्य विमलसागर जी महाराज संघ सहित अपने शिष्य को लेने के लिए आते थे। उस समय गुरुदेव विरागसागर जी महाराज जब उनसे छोटे से शिष्य हैं आप लेने आने का कष्ट क्यों उठाते हैं हम तो स्वत: ही आपके चरणों में आ रहे है।

उस वक्त परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज कहते थे क्या मैं **णमोलोए सव्व साहूणं** मंत्र पढ़ना बंद कर दूं। कितनी मार्मिक बात थी। यदि आज सभी संतों में ऐसी भावना आ जाये वे **णमो लोए सव्व साहूणं** मंत्र को जीवन में, आचरण में उतार ले तो कोई भी संत अलग नहीं दिखेगा सभी एकमंच पर विराजमान मिलेंगे चाहे वो आचार्य आदिसागर जी महाराज की परम्परा के हों, चाहें आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के हों।

धन्य हैं आचार्य विमलसागर जी महाराज की सोच उनकी सरलता, सहजता ऐसे ही गुण सभी संतों में आयें इसी भावना के साथ उनके रजत समाधि महोत्सव पर बारम्बार नमोस्तु करती हूँ।

प्रशंसनीय वाक्यों का प्रयोग

श्रमणी आर्यिका विदूषीश्री माता जी

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज को रजत पुण्यतिथि का प्रसंग चल रहा है। पूज्य आचार्यश्री के गुणानुबाद करना यद्यपि शक्य नहीं है। में सोच रही थी कि परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज का गुणानुवाद करूँ कि परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का क्योंकि कहा है-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लांगू पायें।
बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दिया बताये।।

हम तो मात्र भाग्यशाली है कि मुझे आचार्य विमलसागर जी महाराज के दर्शन करने का एकबार सौभाग्य मिला लेकिन परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज भाग्यशाली भी हैं सौभाग्यशाली भी है अहोभाग्यशाली और महाभाग्यशाली भी हैं क्योंकि उन्होंने परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज के दर्शन भी किये है उनकी सेवा भी की है उनके निकट भी रहे हैं तभी वो आज उन जैसे गुणों को पाकर सारे विश्व में चमक और दमक रहे हैं।

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी कैसे थे कैसी उनकी साधना थी कैसा उनका त्याग था। क्या-क्या गुण उनके अंदर थे यह बताने वाले परम पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज हैं। इसलिए पहले इनका ही गुणानुवाद किया जाना चाहिये।

जब मुझे विरागाभिनंद ग्रंथ के कुछ कार्य करने का सौभाग्य मिला तब मैंने पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज की कुछ फाइलें देखी जिनमें परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज द्वारा मुनि श्री विरागसागर जी महाराज को भेजे गये पत्र रखे थे।

जब मैंने उन्हें पढ़ा तो मुझे लगा कि आचार्य विमलसागर जी महाराज कितने उत्कृष्ट चिन्तनशील थे। एक रत्नत्रयधारी के प्रति उनका जो वात्सल्य रहता था उसे वे चर्या और शब्द दोनों में प्रकट दिखाते थे। मैने पत्र पढ़ा कि आचार्य विमलसागर जी महाराज अपने शिष्य के लिये कितने प्रशंसनीय वाक्यों का प्रयोग करते थे। श्री १०८ मुनिराज विरागसागर जी महाराज, आदरणीय मुनिराज, वीतरागी महामुनिराज, आचार्य बनने के बाद भी श्री १०८ आचार्य विरागसागर जी महाराज। धन्य हैं आचार्य विमलसागर जी महाराज जो अपने शिष्यों पर ऐसे प्रशंसनीय वाक्यों के द्वारा वात्सल्य लुटाया करते थे। यह भी सत्य है कि परम पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज के अंदर अपने गुरु के प्रति अनन्य श्रद्धा-भक्ति भी है तभी उन्हें गुरु का ऐसा वात्सल्य प्राप्त हुआ।

मैं भी प्रार्थना करती हूँ जिस प्रकार आपको गुरु का वात्सल्य प्राप्त हुआ है मुझे भी अपने गुरु का वात्सल्य आत्म कल्याण के लिए प्राप्त होता रहे जिसके सहारे में मोक्षमार्ग पर बढ़कर मोक्ष को प्राप्त कर सकूँ।

1000 के हुए 5000

श्रमणी आर्यिका विनीतश्री माता जी

चलने में पाठ का, मित्रों में साठ का।
सम्मेद शिखर जी में भगवान पार्श्वनाथ का।।
बड़ा ही महत्व है।
सरोवर में कमल का, मैसूर में महल का।
वात्सल्य में आचार्य विमल सागर जी महाराज का।।
बड़ा ही महत्व है।
रात्रि में राग का, फूलों में पराग का।
गुरुओं में विराग का, बड़ा ही महत्व है।।

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज के हमने दो-तीन बार दर्शन किये हैं लेकिन कभी बात नहीं की, मात्र दूर से दर्शन करते थे। एक बार दिल्ली चातुर्मास में जब उनका जन्म दिन मनाया गया तो सभी गरीबों को भोजन कराया गया। वहाँ के लोगों ने 1000 गरीबों को भोजन की व्यवस्था रखी थी लेकिन लाइन में 5000 से भी ज्यादा लोग थे। व्यवस्थापक घबराकर आचार्यश्री के पास पहुंचे तो आ.श्री ने कहा- जो भी बना है उसे एक थाली में रखकर लाईये लोगों ने थोड़ी-थोड़ी सारी सामग्री थाली में रखी और कपड़े से ढ़ककर उसे आचार्य श्री के पास ले गये। आ. श्री ने मंत्र पढ़कर पिच्छी लगाई और कहा जाओ जितने भी लोग आये सभी को भोजन कराना। उन्होंने वह थाली भोजन सामग्री के पास रखी और शाम को ६.००बजे तक जितने भी लोग आये सभी को भोजन कराया फिर भी भोजन बचा रहा ऐसे थे आचार्य विमलसागर जी महाराज। वो जिसे भी आशीर्वाद देते थे उनके सभी कार्य सफल हो जाते थे। ऐसे पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज और वर्तमान में उन्हीं जैसे वात्सल्य के धनी परम पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज के चरणों में बारम्बार नमोस्तु-३।

डारेक्ट टॉवर मिलता है

श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माता जी

जब हम लोग शिखर जी आ रहे थे उस समय सम्मेद शिखर महात्म्य ग्रंथ का स्वाध्याय भी चल रहा था। उसमें शिखर जी की बहुत महिमा लिखी है कि कौन पुण्यशाली शिखर जी की वंदना कर सकता है पहाड़ चढ़ सकता है।

मुझे लग रहा था पता नहीं मैं शिखर जी की वंदना कर पाऊँगा कि नहीं। जब शिखर जी में संघ का प्रवेश हुआ तो पूज्य गुरुदेवक कहीं भी नहीं रूके सीधे परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज के चरणों के दर्शन किये। उस समय मुझे ऐसा लगा कि मानों वहाँ उनकी मूर्ति नहीं, आचार्य विमलसागर जी महाराज साक्षात् बैठे हैं उस समय मेरे नेत्र अपने

आप सजल हो गये मैंने उनसे कहा हे आचार्य भगवन्! मुझे भी शिखर जी के दर्शन करना है मैं यहाँ की वंदना करने आई हूँ। मैंने कुछ किया हो उसे आप माफ करना और मुझे दर्शन कराना और मेरी सानंद वंदनायें पूज्य गुरुदेव के साथ हुई इसकी मुझे बहुत खुशी है।

दूसरी बात मुझे उपवास करना थे तो जब भी (प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी और अन्य दिनों में भी) आचार्य श्री के साथ हम आचार्य विमलसागर जी महाराज के चरण दर्शन करने जाते तो उनसे एक ही बात कहते थे कि हे आचार्य भगवन्! मुझे ३२ उपवास करने हैं मैं जब भी अपने गुरुदेव से कहूँ तो आप उनसे हाँ कहलवा देना बस कुछ नहीं चाहती। आप लोग भी जानते हैं कि कोई भी बात पापा से पहले दादा लोग मान जाते हैं क्योंकि मूलधन से ब्याज प्यारा होता है। आ.श्री से बड़ी हिम्मत करके एक बार मैंने कहा- तो आचार्य श्री बोले- बिल्कुल नहीं, पहले मैं सबसे पूछूँगा तब बताऊँगा। दूसरी बार जब मैंन नमोस्तु करके बोलना चाहा तो आ.श्री बोले- अभी रूको बाद में बात करेंगे। तीसरी बार जब उपवास शुरु ही होने थे उसके एक दिन पहले आ.श्री ने अपने आप माताजियों से कहा- कि आज इनके आहार अच्छे करा देना। उस दिन मुझे कुछ बोलना ही नहीं पड़ा क्योंकि मैं पू. बड़े आ.श्री से बोलकर आई थी। तीसरी बात यह कि जिस बात को मैं काफी समय से पूज्य आ.श्री से कह नहीं पा रही थी वह बात भी मैंने पूज्य गुरुदेव से कह दी। ये सभी काम हुए, मैं नहीं जानती ये सब चमत्कार किसने किया आचार्य भगवन् विरागसागर जी ने या बड़े आचार्य भगवन् विमलसागर जी ने मुझे तो ऐसा लगता है परस्पर दोनों के कनेक्शन से ही ये सभी कार्य सफल हुए हैं क्योंकि हमारी बात इतनी जल्दी आचार्यश्री नहीं सुनते थे लेकिन मैंने वहाँ कहा- जहाँ का डारेक्ट टावर आचार्य गुरुवर से मिलता था अर्थात् आचार्य विमलसागर जी महाराज का टावर डारेक्ट आचार्य गुरुवर विरागसागर जी से मिलता था इसलिए हर बात बहुत जल्दी किलियर हो जाती थी।

सच बताऊँ तो मैंने आचार्य विमलसागर जी महाराज को न देखा न जाना था। सन् २००० के चातुर्मास में उनकी मूर्ति वहाँ थी भी या नहीं यह भी हमें नहीं पता था लेकिन अब मैं इतनी बार उनके दर्शन करने गई हूँ तो ये देन सिर्फ पूज्य गुरुवर विरागसागर जी महाराज की है कि उन्होंने अपने चिंतन अनुभव से हमारे अंदर श्रद्धा जाग्रत की ऐसे महान थे आचार्य विमलसागर जी महाराज।

अंत में अब यहाँ से जाते समय हमें तीन बातें याद रहेंगी। प्रथम तो शिखर जी की वंदना अब कब मिलेगी, दूसरी आचार्य विमलसागर जी के चरण कब मिलेंगे तीसरी जिन्हें कभी नहीं छोड़ना चाहती इन आचार्य भगवन् से अलग विहार कर कब पुन: इनके दर्शन प्राप्त करने इनकी शरण में आऊँगी।

रग-रग से झलकती है गुरुभक्ति

श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

आज हमारा बड़ा सौभाग्य है कि हमें अपने दादा गुरु के बारे में कुछ कहने का अवसर प्राप्त हुआ है। यद्यपि हमने साक्षात् तो परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज के दर्शन नहीं किये लेकिन उनकी जो करुणा है, वात्सल्य है निमित्तज्ञान है उसका दर्शना पूज्य गणचार्य विरागसागर जी महाराज में साक्षात् किया है। क्योंकि पूज्य गुरुदेव में उनके सारे गुण दिखते हैं।

हम अपने आपको बड़े सौभाग्यशाली मानते हैं कि हम एक ऐसे गुरु के शिष्य हैं जिसमें असीम गुण हैं और उसमें सर्वोपरि है गुरुभक्ति। पूज्य गुरुदेव के रग-रग से गुरुभक्ति झलकती है।

आपको बता दे एक माँ की गोद में रहने वाला बालक अपनी माँ के इतने स्वप्न नहीं देखता होगा जितने स्वप्न कि पूज्य गुरुदेव अपने गुरु के अभी तक देखते हैं। पूज्य गुरुदेव ने लोहारिया २७.९.१० लोहारिया में एक स्वप्न सुनाया था कि पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज उनके स्वप्न में आये और एक दबा की शीशी हाथ में लिये हुए हैं वो शीशी लेकर आचार्य श्री के पास आये तो आचार्यश्री विरागसागर जी बोले- गुरुदेव मैं स्वस्थ हूँ मुझे कुछ नहीं हुआ है फिर भी आचार्य विमलसागर जी उनके पास आये बोले- वश थोड़ी सी जलन करेगी बाद में बहुत अच्छा लगेगा और वो दबा गणाचार्य गुरुदेव विरागसागर जी महाराज को लगा दी।

दूसरा स्वप्न आचार्य श्री ने सुनाया था- आचार्य भरतसागर जी और हम आपस में बात कर रहे हैं उसी कमरे में कांच के अंदर आचार्य विमलसागर जी बैठे हुए हैं। वो उठकर उस शीशे को खिसकाने की कोशिश कर रहे हैं पर वो खिसक नहीं रहा इतने में वो कांच खिसक गया आचार्य श्री बाहर आये उन्हें देख गणाचार्य भगवन् बात छोड़कर आचार्य विमलसागर जी महाराज के चरण छूने गये उन्होंने भी खड़े होगर आशीर्वाद दिया। फिर चले गये। इतने में आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज ने पूछा कहाँ गये थे तो गणाचार्य भगवंत् ने कहा- हम गुरुदेव के चरण छूने गये थे वो बाहर आये थे। उस समय आचार्य भरतसागर जी महाराज ने कहा- कि आपने हमें नहीं बताया गुरुदेव बाहर आये हैं तो पूज्य गणाचार्य भगवन् ने कहा- मुझे याद नहीं रहा वश यही ध्यान था कि चरण छूना है। इसी प्रकार श्रेयांसगिरि के पंचकल्याणक के पूर्व आचार्य श्री को बहुत चिंता थी क्योंकि वहाँ एक भी जैन समाज का घर नहीं है साथ ही उपसंघों का आगमन भी होना था।

औषधि से भी गुणकारी आशीष

श्रमणी आर्यिका विनिज्ञाश्री माता जी

गुरु आशीर्वाद उस परमौषधि के प्रतिरूप है जो बिना खाये एवं बिना लगाये ही रोगी को स्वास्थ्य बना देती है लौकिक औषधियां तो निष्क्रय भी होती है किन्तु श्रद्धापूर्वक लिया गुरुवर का आशीर्वाद अवश्यमेव फलीभूत हुआ करता है ऐसे अनेकानेक उदाहरण मैंने स्वयं अपने नेत्रों से देखे हैं कि यदि श्रद्धा सच्ची है तो गुरुवर के द्वारा दी गई राख भी औषधि का काम कर गई।

एक ऐसा ही उदाहरण टीकमगढ़ में देखने को मिला है जब प.पू.गणाचार्यश्री विरागसागरजी महाराज के चमत्मकारी आशीर्वाद के प्रभाव से कैन्सर जैसी असाध्य बीमारी भी सहज ही ठीक हो गई बात उस समय की है जब सन् २०१६ में पू. गुरुवर चतुर्विध संघ सहित धर्म नगरी टीकमगढ़ में प्रवासरत् थे टीकमगढ़ के श्रद्धालु भक्त तो गुरु सेवा में दिन-रात एक कर रहे थे वहीं पू. गुरुवर भी अपनी अमृतमयी वीतराग-विरागवाणी से सबको कर्म मुक्ति का नीर प्रदान कर रहे थे तभी एक दिन वहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्रेष्ठी बाबूलाल जी अपने ७-८ वर्षीय पौत्र के साथ गुरु चरणों में उपस्थित हुये।

चेहरे में चिंताओं की रेखा एवं अन्त:करण एक भिन्न ही उत्सुकता के साथ जैसे ही उन्होंने पू. गुरुवर को नमोस्तु किया तो गुरुवर ने सहज ही पूछ लिया बाबूलाल जी क्या परेशानी आ पड़ी जो यूँ मुंह उतरा है। बाबूलाल जी तब और अधीर वचनों में बोले-गुरुवर पौत्र की और इशारा करते हुए। इसकी जान तो अब आप ही बचा सकते हैं कैन्सर जैसी गंभीर बीमारी से जूझता हुआ। न ही दिन चैन लेता है और न ही रात्रि में सोता है। पेट में सूजन होने से तकलीफ भी बहुत है। उसे छाती के पास कैन्सर था, हर जगह ईलाज करा लिया किन्तु कोई लाभ न होने से बस अब आपकी ही शरण अंतिम उपाय है बोलते-बोलते बाबूलाल जी अश्रुपूरित हो गये उक्त वक्तव्य सुनते हुये पू. गुरुवर भी द्रवित हो उठे।

तब उन्होंने उस बच्चे के सिर पर वात्सल्य के साथ हाथ रखा और आशीर्वाद प्रदान करते हुये कहा- घबराओं मत दुख भी सुख की तरह शाश्वत नहीं रहता बस भगवान पर श्रद्धा रखो तथा बच्चे से भी कहा कि प्रतिदिन मंदिर जाना तुम जल्दी ठीक हो जाओंगे। पू. गुरुवर के ये शब्द सुन उन्हें भारी संतोष का अनुभव हुआ फिर तो ऐसा लगा मानों गुरुवर ने आशीर्वाद तथा सान्तवनापरक वाणी के द्वारा उस बच्चे को परमौषधि का ही रसपान करा दिया हो।

कुछ दिन उपरांत पू. गुरुवर का विहार हुआ और बढ़ चले गुरुवर गंतव्य को पावन करने किन्तु बाबूलाल जी बीच बीच में पौत्र के साथ दर्शनार्थ आते रहे उन्हें पूर्ण श्रद्धा थी कि गुरुवर के आशीर्वाद से वह अवश्य ठीक हो जायेगा सच ही है जहाँ श्रद्धा भक्ति मन से होती है तो अशुभ कर्म रूपी श्रंखला सहज ही ढ़ीली हो जाया करती है।

ऐसा ही हुआ जब दिनांक १३.२.२०१६ को बाबूलाल जी पुन: गुरुचरणों में आये तो इस बार उनके चेहरे में एक अपूर्व ही खुशी दृष्टिंगत हो रही थी उनका पौत्र भी दौड़ता हुआ गुरुचरणों में आया और बोला- महाराज जी मैं ठीक हो गया पीछे से बाबूलाल जी भी आ गये और बतलाया कि गुरुवर आपके आशीर्वाद से तो असंभव कार्य भी संभव हो गया। महिनों से जो चिंता हमें सता रही थी वह आपके आशीष के प्रभाव से सहज ही हल हो गई अर्पित का कैन्सर समाप्त हो गया बिना किसी ऑपरेशन के। धन्य है गुरुवर की महिमा जो कष्टों को सुखमय बनाकर हर श्रद्धालु भक्तों को प्रसन्नता प्रदान करते हैं।

प्रार्थना

क्षुल्लिका श्री १०५ सुश्रेयमति माताजी

वीतराग प्रभु की लखमुद्रा, मिथ्यातम का वमन हुआ,
पार्श्व प्रभु की प्रशांत छवि ने, उद्वेगों का शमन किया।
बना रहा अब तक भिखारी, आपकी महत्ता को न जान सका,
कष्ट अनेक उठाएं प्रभुवर, संसार सागर में रुला फिरा।
कैसे अपने दुखों का ज्ञान व्यान करूँ, आपसे कुछ छिपा नहीं,
पापी हूँ जड़ हूँ, मायावी हूं, कहीं भी मुझको चैन नहीं।
तुम ही दयालु हो भगवन, अब आपकी शरण में आया,
मेरा कसूर माफ करो, इंसाफ मांगने मैं आया।
चाह नहीं हैं भोगों की, न इन्द्रिय सुख की अभिलाषा,
कर्मो को बस काट सकूँ, प्रभु बतला दो ऐसी परिभाषा।
इस संसार में कुछ भी अपना नहीं, प्रभु आपने बतलाया,
जो कुछ भी अनित्य है, नित्य नहीं कुछ भी पाया।
अशरण हैं प्रभु यहाँ पर सभी, किसकी शरण में जाऊँ मैं,
एक आप ही शरण हो प्रभुवर, तब शरण छोड़कर कहाँ जाऊँ मैं।
अकेला यह जीव अनादि से, जनम मरण दु:ख भरता है,
चारों गतियों में घूम-घूम कर, कर्म भार को ढोता है।
जन्मे अकेला, मरें अकेला, कोई किसी का न साथी है,
जैसी करनी आप करे, वैसे फल का भागी है।
भूल हुई भगवन मुझसे, पर को अपना माना है,
स्व पर का भेद न जाना, इसीलिए पछताना है।
यह तन हाड मांस की थैली, निशदिन अशुचिता बहती है,
नहीं किसी से शुचि होती, रत्नत्रय ही एक औषधि है।
मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग, प्रमाद को कर्मो के आने को कर्मो के आने का द्वार कहा,
व्रत, समिति, गुप्ति, संयम से कर्मों का आना रुक जाता।
संवर पूर्वक करो निर्जरा, कर्म भस्म हो भारी,
तप बल से जो कर्म खपावे, वही मोक्ष का अधिकारी।
अनंत आकाश में लोकाकाश, स्वयं सिद्ध अधर जानो,
६ द्रव्यों से जो भरा हुआ है, अमिट अनादि मानो।
निगोद से मानव तन की यात्रा, अति दुर्लभ ही पाना,
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन, ज्ञान ध्यान का प्रगटाना।
सम्यग दर्शन, ज्ञान, चरित्र रत्नत्रय धर्म सच्चा जानो,
जो कुछ भी सुख दु:ख है, कर्म विपाक ही मानो।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु की वाणी पर सब अमल करो,
पालन कर संयम का सुश्रेय, भव सागर पार करो।।

प.पू. राष्ट्रसंत गणा.श्री विरागसागर जी महराज के ३७वें मुनिदीक्षा दिवस पर भक्तों के हृदयोद्गार-

असीम ज्ञान के सागर

महानुभाव! एक जीवात्मा पुरुषार्थ करता है और वह परमात्मा बन जाता है। यद्यपि रास्ते में रोरों भी अटकते हें लेकिन जो दृढ़ निश्चिय होते हैं वे रास्ते में पड़े रोरों से कभी विचलित नहीं होते हैं। ऐसे ही हमारे आचार्यवर विरागसागर जी महाराज हैं। इनके पथ पर रोढे भी आये लेकिन उनसे ये बिल्कुल भी वो कभी विचलित नहीं हुए और अपने मार्ग पर दृढ़ता से बढ़ते रहे इसलिए आज हमें यह दिन देखने को मिल रहा है कि हम इनका ३७वाँ मुनिदीक्षा दिवस मना रहे हैं। हम जानते हैं-

आकाश में तारों की गिनती की नहीं जा सकती है,
मेघ की धाराओं की गिनती की नहीं जा सकती है।
और समुद्र की लहरों की गिनती की नहीं जा सकती,
उसी प्रकार आचार्य विरागसागर जी के गुणों की गिनती की नहीं जा सकती है।।

परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ने अपने जीवन में जो कार्य किये हैं उनकी हम विद्वान इसलिए अनुशंसा करते हैं क्योंकि वे हमारी संस्कृति को जीवंत करने वाले कार्य हैं।

पूज्य आचार्यवर हम जानते हैं जहाँ आनंदवर्धन ने केवल एक टीकालिखी वह जगत विख्यात हो गया। मल्लिनाथ ने टीका लिखी वह जगत विख्यात हो गया उसी प्रकार हमारे आचार्य अमृतचंद और जयसेन स्वामी ने केवल टीकाएँ लिखी उनकी टीकाओं ने उन्हें इतना उत्कर्ष दिया कि हम शब्दों में नहीं कह सकते इसी प्रकार आपने भी उन्हीं आचार्य कुन्दकुन्द के चार ग्रंथों पर वारसाणुपेक्खा पर सर्वोदया, रयणसार पर रत्नत्रयवर्धिनी टीका लिखी जिन पर अनेक विद्वान मंथन कर चुके हैं और आगामी काल में शीघ्र आने वाली शील पाहुड लिंगपाहुड ग्रंथ की श्रमण संबोधनी एवं श्रमण प्रबोधनी टीकाएँ साहित्य को आपका अमूल्य अवदान है उसकी हम प्रशंसा करते हैं।

इसकी अचेतन कृति २०० एवं अनेकों चेतन कृतियाँ हैं इन कृतियों से संस्कृति का प्रचार प्रसार अक्षुण्य बनेगा। हम आपके ज्ञान की गरिमा पर गौरव करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि कई बार अज्ञानियों द्वारा सुनी हुई बातों पर हम विकल्प कर लेते हैं लेकिन उन्हें छोड़कर जब आपके अगाद्ज्ञान सरोवर नहीं सागर को देखते हैं तो हमारा भी मन उसमें डुबकी लगाकर उसके असीम आनंद को लूटने का हो गया। उसी आनंद के वशीभूत हो हम आपके चरणों में आये हैं। हे गुरुवर हम आपको बारम्बार नमन करते हैं आपने इस धरा को आ. विशुद्धसागर जी दिये, विमर्शसागर जी दिये, विमद्सागर जी दिये, आ. विभव सागर जी, आचार्य विनिश्चय सागर जी, विकर्षसागर, जी और इनका विशाल परिवार दिया जो कि श्रमण संस्कृति को अंत तक अक्षुण्य रखने वाला महान कार्य है। आपके ३७ वें मुनिदीक्षा दिवस पर हम समस्त विद्वानों की ओर से आपके श्री चरणों में सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की सिद्धि हेतु बाम्बार नमोस्तु करते हैं।

पं. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

परम पूज्य उपसर्ग विजेता चारित्र शिरोमणी, न्याय भास्कर, सिद्धान्त चक्रवर्ती वात्सल्य रत्नाकर आ.श्री १०८ विरागसागर जी महाराज श्री को नमोस्तु-३।

अनुशासन वही रख सकता है जो प्रथम अनुशासन में स्वयं डला हो। आचार्य श्री अनुशासन में मात्र ढेल ही नहीं, अपितु अपने समग्र शिष्यों को भी अनुशासन के साँचे में ढालते हैं तथा जो शिष्य अनुशासन में होता है उन्हें संस्कारित कर ऊँचा उठाते हैं। तभी आज हर नगरी ग्राम समाज को आ.श्री के हर शिष्य उपहार स्वरूप होता है।

आदीश अरविंद जैन

परम पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी के चरणों में नमोस्तु-३ संतों के बारे में लिखना बहुत कठिन है क्योंकि उनका जीवन साधना घटना एवं शिक्षाओं भरा होता है। उनके बारे में जितना लिखे उतना अधुरा लगता है।

पू.श्री एक अध्ययन शाली संत है, निरन्तर साधकों को आगम की गहरी शिक्षा दे सच्चे पथ पर लगाते हैं। एक और आपकी सरलता एवं सहजता प्रसद्धि है तो दूसरी ओर आप स्वयं अनुशासन में रहते हुए अनुशासन विहीन लोगों के प्रति कठोरता में भी प्रसिद्ध हैं। आपने कभी भी किसी झुठे तंत्र-मंत्र तथा झुठे चमत्कारिक घोषणाओं को स्वीकार नहीं किया अपितु उन्हें यथा अवसर समझाकर खण्डन किया तथा लोगों ने तरह तरह के घनघोर उपसर्ग किये फिर भी आपने बड़ी धैर्य एवं समता से सहन किया और आपने यह सार्थक कया कि-

सब में रहकर भी सबसे अलिप्त, यह पहचान है समता की।
सब पर समदृष्टि रखे जो कोई, उसमें ही ज्योति है समता की।।

विनीता-निकुंज भाई संघवी

कविता

दीक्षा जयंति मना रहे हम, ऐसे गुरु महाराज की।
जिनकी चाह नहीं कोई, तक्ष की और ताज की।।
उस्मानपुरा में आगमन से, धर्मशक्ति का बाग लिखा।
मानों घर बैठे ही हमको, समवशरण का दर्श मिला।।
माँ श्यामा के अभारी हम, महायशस्वी सुर्य दिया।
प्राची सुत जिनकी उजियारा, जिनके आगे सब लगे दिया।।
संकल्प यही इस अवसर पर, गुरु सेवा में हो लवलीन।
उनके पद चिन्हो पर चलकर, मोक्ष मार्ग में हो तल्लीन।

सरोज, श्रीपाल जैन, अहमदाबाद

वात्सल्य

परम पूज्य आचार्य विरागसागर जी ससंघ का जब दर्शन किया तब से आचार्य श्री ने हम सब का मन मोह लिया। हमने जब सर्व प्रथम गणचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के दर्शन किये तो मैं उनके वात्सल्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी, चाहे छोटा हो या बड़ा, वृद्ध हो या जवान, अमीर हो या गरीब, मित्र हो या शत्रु, पू.श्री का वात्सल्य सभी के लिए एक समान रहता है।

आचार्य श्री अपने वात्सल्य से कच्ची मिट्टी के समान शिष्यों को आकार देकर पक्का घड़ा बनाते हैं जिसमें उनके शिष्य अपने ज्ञान रूपी जल को स्थिर रखते हैं। गुरु माँ की तरह होते है, जिस प्रकार गौतम गणधर ने महावीर स्वामी को अपना गुरु बनाया और निर्वाण को प्राप्त हो गये, उसी प्रकार गुरु से ही शिष्य का जीवन शुरु होता है।

आचार्य श्री के वात्सल्यता के बारे में मेरा ज्यादा कहना या कम कहना कोई मायने नहीं रखता में जितना भी लिखूँ वह ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। अंत में गुरु चरणों में नमास्तु-२।

अंजली दीपक कुमार जैन

ज्ञान

प.पू. आचार्य विरागसागर जी महाराज के ज्ञान के बारे में हम लिखे तो कैसे लिखे ? जिनको जगह-जगह पर बड़े-बड़े आचार्यों एवं विद्वानों ने भिन्न-भिन्न उपाधियों से सम्मानित किया है। आप श्री तो ज्ञान के सागर है और ज्ञान देने की अपकी सरल एवं सहज शैली से हम बहुत प्रभावित हुए। आपने श्रुत सेवा में लगभग ५० से अधिक पुस्तक के द्वारा सरस्वती माँ के भण्डार को भर कर भागीरथ का कार्य किया। और आपकी प.पू. कुंदकुंदाचार्य स्वामी द्वारा रचित वारसाणुवेख्या नामक ग्रंथ पर लिखी गई संस्कृत सर्वोदयी टीका जिन आगम के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

आप चारों अनुयोग में प्रकाण्ड विद्वान है और **कषाय पाहुड** जैसे ग्रन्थ की वाचना में आप जिस सरलता और

सहजता से समझाते हैं वही आपकी ज्ञान गंगा के बारे में लिखने को प्रेरित करता है।

तथा जिन्होंने बुन्देलखण्ड में धवला जी की १६ वाचनाएँ पूर्ण की है। इससे ही पता चलता है कि आचार्य श्री महान ज्ञान के भण्डार है।

मीना, आदीश कुमार जैन, गुजरात

वात्सल्य रत्नाकर अभिक्ष्ण ज्ञानोपयोगी गणाचार्य १०८ विरागसागर जी के चरणों में बारम्बार नमोस्तु-नमोस्तु।

वैराग्य को दृढ़ करने एवं संयम साधना को निर्दोष बनाने तथा आगमानुकुल चर्या बनाने के लिये व ध्यान वृद्धि के साथ केवलज्ञान की उत्पत्ति के कारणभुत एवं आचार्य प्रणीत शास्त्रों के अर्हनिश स्वाध्याय में आप निरन्तर रत रहते हो। एवं साधु समुह को भी स्वाध्याय का मर्म बताकर उन्हें अध्ययन में प्रेरित व प्रोत्साहित करते रहते हो। मेरी आप श्री से प्रार्थना है कि आप जैसे गुण प्राप्त कर सकें।

आशा-अरविंद संघवी, ईडर

परम पूज्य उपसर्ग विजेता, क्षमामूर्ति, श्री १०८ विरागसागर जी महाराज आज के युग के महान तपस्वी संत है। आप अपने अध्ययन तपस्या तथा लेखन कार्य में सदा तत्पर रहते हैं। आपके श्री चरणों में मेरा बारम्बार मनोस्तु-३।

श्री राजेश जैन रावका पांडीचेरी

प.पू. आचार्य श्री गुरुवर विरागसागर जी महाराज के श्री चरणों में मेरा कोटिश: नमन, आपने तप ध्यान और ज्ञान से समस्त श्रावक एवं श्राविकाओं का अज्ञान रूपी अंधकार दूर किया है। आपका जीवन तो त्याग, वात्सल्य, ज्ञान की मूर्त उदाहरण है जो सभी श्रमण व श्रावकों के लिए प्रेरणा श्रोत है।

पूजा पहाड़िया मद्रास

तुम्यं नमोस्तु प्रवर वात्सल्य के सुधाम, तुम्यं नमोस्तु परम पावन मिष्ठ नाम।
तुम्यं नमोस्तु गुरुवर विराग, करती सरोज तव चरणों प्रणाम।।

वर्तमान युग में विभ्रांत समाज के लिए आचार्य श्री एक आलोक स्तंभ हैं। आपने अपनी चर्या, चारित्र, व्यक्तित्व एवं वाणी, लेखनी से जो मूल्यादर्श निरूपित किया वही शाश्वत मानवता का मूल्य उद्घोष है। आपकी वाणी में सरस्वती एवं आचरण में मूलाचार है। शील की झील में कमल खिलाने वाले आचार्यश्री के वात्सल्य की सुनहेरी किरणे संपूर्ण विश्व को आलोकित कर रही हैं। आपके दिव्य चरणों में श्रद्धावनत्

पुष्पा बाकलीवाल, मद्रास

संघ सहित हो जहाँ पर, बन जाता शुभ तीर्थधाम।
ऐसे श्री गुरुवर विराग के, मेरा हो शत्बार प्रणाम।।

आ.श्री विशाल वितृत वृक्ष के समान हैं। जिनकी मूल जड़ सम्यग्दर्शन है ज्ञानरूपी है चारित्र रूपी शाखाएँ है तथा अनेकों मुनिगण रूपी पक्षियों को आश्रय दाता हैं ऐसे वृहद आचार्यरूपी वृक्ष की मैं वंदना करता हूँ।

महेन्द्र झांझरी, मद्रास

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

विमल के पास जाना

चिन्तामणि बज, जयुपर

मैं बहुत छोटे से ही परम पूज्य आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज से जुड़ा रहा मेरे ऊपर उनका असीम उपकार है आज मेरे पास जो कुछ भी है यहाँ तक कि मेरे प्राण भी आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के आशीर्वाद से आज सुरक्षित है।

जब उनकी समाधि का समय आया तो मैं बहुत दुखी हो रहा था मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था मैं क्या करूँ। मेरी ऐसी हालत देखकर आचार्य महावीर कीर्ति महाराज ने पूछा बेटा क्या हुआ? उनका इतना पूछना था कि मेरी आंखों में भरे हुए बाहर फूट पड़े और मैं उनके चरणों में सिर रखकर जोर-जोर से रोने लगा। महाराज ने मेरे सिर पर हाथ रखा बोले- क्यों घबराता है? मैंने कहा- आचार्य श्री अब हम लोगों का क्या होगा कैसे मेरा जीवन चलेगा, मैं कहाँ जाऊँगा किससे बात कहूँगा?

आचार्य श्री बोले- बेटा तुझे जब-जब मेरी जरूरत पड़े तब तू विमल के पास चले जाना, जो मेरे पास है वह सब विमल के पास है। ये वाक्य स्वयं आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज ने मुझसे कहे थे। यद्यपि उनकी समाधि होने के बाद काफी समय तक तो मैं इस बात को भूला रहा किन्तु एक दिन अकस्मात् ही मैं कहीं गया था वहाँ बहुत बड़ी लम्बी लोगों की लाइन लगी देखी। वहीं पास में एक बेनर लगा था। जिसमें आचार्य महावीर कीर्ति महाराज के साथ एक और फोटू लगी थी फोटू देखकर मैने बेनर पढ़ा तो उसमें लिखा था आचार्य महावीर कीर्ति महाराज के शिष्य आचार्य विमलसागर जी महाराज उस समय मुझे आचार्य श्री के शब्द याद आये कि मेरे बाद तू विमल के पास चले जाना। मैं तुरन्त अपना कार्य छोड़कर महाराज के पास गया और उनसे सारी बात कही। महाराज ने इतने अच्छे से खुश होकर मुझे आशीर्वाद दिया मानो मैं उनका बहुत पुराना शिष्य रहा हूँ।

उस समय से मेरे दुखों को सुख में बदलने वाले, बिगड़े कार्य बनाने वाले आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज रहे। सन् २०१२ से मैं उन्हीं के दर्शन आचार्य श्री विरागसागर जी में करता हूँ और प्राथना करता हूँ कि आप मेरे मार्ग दर्शक बनें।

स्वप्न में आकर कहा

शिखर चंद जी पहाड़िया, मुंबई

जिनके गुणगान गाना संभव नहीं है ऐसे परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के चरणों में रहकर मैंने सब कुछ पाया। उनकी कुछ बात मैं आपको बताना चाहता हूँ। आज से १९ वर्ष पहले सन् २००० की बात है मैं रात को सोया हुआ था। पहले आपको मैं एक बात बता देता हूँ। आप लोग सोचते होंगे आचार्य विमलसागर जी महाराज अब नहीं है लेकिन मैं कहता हूँ वो अभी भी हैं यदि आप उन्हें सच्चे मन से याद करो तो वो अभी भी उतनी ही रक्षा करते हैं आशीर्वाद देते हैं। मुझे रात्रि में २ बजे स्वप्न में दिखे बोले बेटा तू उठ जा तेरी इनकम टेक्स की रेट आने वाली है मैं उठा और अपने बच्चों को भी उठा दिया कि लोग तैयारी करो कभी भी रेट आ सकती है। रात्रि में २ बजे से मैने अपने ऑफिस का हिसाब-किताब किया। शिखर जी पंचकल्याणक का भी सारा हिसाब-किताब किया और जरूरी सभी कागज एक बेग में अच्छे से रख लिये और सुबह होते ही ठीक ७.०० बजे मेरे घर, चारों कारखानों में एक साथ इनकम टेक्स वाले आ गये और सब चैक करके शांति से सारा मामला निपट गया। ऐसे हमारे गुरुदेव अभी भी स्वप्न में आकर हमारी रक्षा करते हैं।

मैं इतनी तकलीफों से गुजरा हूँ आज मैं गुरुदेव के कारण ही आपके बीच खड़ा हूँ और उन्हीं के आशीर्वाद से तीर्थक्षेत्र कमेठी का अध्यक्ष बन सका हूँ।

विशाल व्यक्तित्व के धनी

देवेन्द्र कुमार जैन, मधुवन

आज का दिन एक ऐतिहासिक दिन है कि आज परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज का यह रजत समाधि दिवस उन्हीं के आदर्शों पर चलने वाले, प्रिय शिष्य परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मनाने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

मैं सिर्फ दो बार ही आचार्य विमलसागर जी महाराज से मिला हूँ। वो यहीं शिखर जी की बीसपंथी कोठी के ऊपर वाले कमरे में विराजमान थे। जब मैंने उनके दर्शन किये तो मुझे लगा कि निश्चित ही ये महापुरुष हैं। आज वैसा ही व्यक्तित्व हमने परम पूज्य विरागसागर जी महाराज में देखा। जब मैं मिनस्टर को इनके दर्शन कराने मकरे में ले गया और वो दर्शन कर व आशीर्वाद लेकर बाहर निकले तो मुझसे बोले- ये तो विशाल व्यक्तित्व के धनी हैं। मैंने कहा- हाँ, तभी तो आप इनसे आशीर्वाद प्राप्त कर हमारे विश्व विख्यात तीर्थ सम्मेद शिखर जी की सारी समस्याओं का निदान कर दो। उन्होंने यहाँ की समस्याएँ दूर करूँगा। तब मुझे लगा कि आचार्य विमलसागर जी अपना तेज, ओज, कई गुना बढ़ाकर आचार्य विरागसागर जी में भरकर गये हैं।

भजन

गुरुवर तेरी वाणी अमृत झर-झर झरती जाये।
राह में भूले भटकों को यह, सच्ची राह दिखाये।। गुरुवर.....
तेरे ज्ञान और चिंतन में सागर जैसी गहराई-२
हर पल तेरे अधरों पर जिनवाणी हमने पाई
है यही अरदास गुरु जीवन मंगल बन जाये।। १।। गुरुवर ....
सबके हृदय की पीड़ा हरले तेरी अनुपम वाणी-२
सुनकर पतित पावन हो जाये, वाणी ऐसी कल्याणी
वेद, ग्रंथों का सार गुरु तेरे प्रवचन में पाये।। २।। गुरुवर....

प्रभावित हूँ

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज से मैं तो ज्यादा परिचित नहीं रहा लेकिन मेरे बड़े भाई उनके परम भक्त हैं उन्हीं के कारण हमारे पूरे परिवार पर आचार्य विमलसागर जी महाराज का आशीर्वाद रहा। हमारे घर में छोटा-बड़ा कोई भी कार्य होता था उसमें आचार्य विमलसागर जी महाराज का आशीर्वाद जरूर लिया जाता था। कोई भी कार्ड आदि छपने थे उनमें आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की फोटू आशीर्वाद जरूर लिखा जाता है। यही कारण है कि हमारे सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं उनमें कोई कमी भी महशूस नहीं होती है। यह हमारा आज तक का अनुभव है इसलिए ज्यादा करीब न रह पाने पर भी मैं उनके प्रभावित हूँ परम भक्त हूँ।

जीनू जैन, मुम्बई

आप ही मार्गदर्शक हैं

वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, करूणा, दया, प्रेम का अपार सागर, जिनके पास हर व्यक्तित्व अपने आप खिचा चला आता है जिनके चमत्कार को देख हर व्यक्ति नत्मस्तकक हो जाता था।

आज इस शाश्वत क्षेत्र सम्मेद शिखर जी में परम पूज्य युग के महान श्रमण, गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

के ससंघ सान्निध्य में हमें परम पूज्य वात्सल्य दिवाकर आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की रजत समाधि महोत्सव मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है। हम अपने आपको धन्य समझते हैं कि एक महान व्यक्तित्व का समाधि महोत्सव हमें उनके ही शिष्य महान संघ नायक के सान्निध्य में प्राप्त हुआ है। पूज्य गुरुदेव आ. विमलसागर जी महाराज के अभाव में अब आप ही हमारे लिए मार्ग दर्शक हैं आप अपना आशीष हम भक्तों पर लुटाते रहिये ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ।

औषधि व नैमित्तिक ज्ञाता

हम परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज के बारे में इतना नहीं जानते जितना की आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज जानते हैं। यद्यपि मैं भी काफी समय उनके साथ रहा हूँ इसलिए मुझे ज्ञात है कि आचार्य श्री ग्रहस्थावस्था में भी औषधि के अच्छे ज्ञाता थे। मेरा परिचय एक खुदी के लड़के के साथ हुआ। उसने मुझे बताया कि मैं आचार्य विमलसागर जी महाराज का चेला हूँ वो हमारे परिवार के थे। उन्होंने मेरी दादी, अपनी बुआ (आचार्य विमलसागर जी महाराज की बुआ) से कहते थे जिस चूले से वह रोटी बनाकर लाती थी उसे खाते समय वे कहते थे बुआ इस चूले को फोड़ ले और इसके नीचे का धन निकाल ले। सोचिए जब ग्रहस्थावस्था में उन्हें इतना ज्ञान था तो मुनि और आचार्य अवस्था में कितना होगा। उस समय उनकी बुआ कह देती थी तू तो रोटी खा तुझे धन से क्या करना है। कालान्तर में पोतों के समय में जब वह मकान टूटा तो ठीक चूले के नीचे एक हण्डी निकली जिसमें कोयले थे। इसका मतलब है जिस समय आ.श्री कहते थे उस समय जरूर उसमें धन था जो बाद में पुण्य न होने से कोयला बन गया।

ऐसे ही एक बुढ़िया का बच्चा बीमार था वह बुढ़िया भोजन बनाते समय उनसे दवा लेने आयी उन्होंने वहीं से उठाकर राख की पुड़िया बनाकर दे दी उसका बच्चा उस एक ही पुड़िया में ठीक हो गया। यह तो ग्रहस्थावस्था की घटनाएँ हैं इससे भी बड़ी कई घटनाएँ उनकी मुनि अवस्था और आचार्य अवस्था में चमत्कार के रूप में सिद्ध हुई ऐसे परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज को हम बड़ी श्रद्धा-भक्ति से शीश झुकाते हैं।

अशोक कुमार जैन

अनादर का कारण

पापोदयान्मे वद देव कस्मा, दनादरः कौ भवतीह जन्तोः।

अर्थ- हे देव! अब यह बतलाइये कि किस पापकर्म के उदय से जीव इस पृथ्वी पर अनादर को प्राप्त होता है।

पुरा भवे देव गुरुस्मृतीनां, कृत्वाऽपमानं दृदियो ह्यतुष्यत्।
तस्यापमानोऽपि पदे पदे स्या, न्निंदा सदा चान्यभवेऽपकीर्तिः।।५।।

अर्थ- जो पुरुष पहले भवमें देव, गुरु और शास्त्रें का अपमान कर अपने हृदय में संतुष्ट होता है वह पुरुष स्थान-स्थान पर अपमानित होता है, सदाकाल उसकी निंदा होती रहती है और अगले जन्म में उसकी अपकीर्ति होती है।

दुष्ट स्त्री प्राप्त होने का कारण

कर्मोदयान्मे वददेव कस्माद्।
नरः कुभार्या लभतेऽन्यलोके।।

अर्थ- हे देव! अब कृपाकर यह बतलाइये कि किस कर्म के उदय से व किस पापकर्म से इस जीव को परभवमें दुष्ट स्त्री प्राप्त होती है।

पत्न्या समंयः कलहं च कृत्वा, निंदा सुनार्याश्च विधाय रोषात्।
दृष्ट्वा ह्यतुष्यत्कलिकारिणी स्त्री, स दुष्टभार्या लभतेऽन्यलोके।।६।।

अर्थ- जो मनुष्य अपनी स्त्री के साथ रात-दिन लड़ता रहता है अथवा किसी द्वेष के कारण सदाचारिणी स्त्रियों की

निंदा करता है अथवा कलह करने वाली स्त्री को देखकर अत्यंत संतुष्ट होता है ऐसा मनुष्य परलोक में जाकर अत्यंत दुष्ट स्त्री को प्राप्त करता है।

अत: सज्जनों को चाहिए कि वे अपकीर्ति एवं दुष्टा स्त्री के कारणभूत ऐसे कार्यों को कभी न करें।

भावत्रयफल प्रदर्शी आचार्य कुन्थुसागर जी विरचित

मैं भक्त तेरा ....

तेरे रूप में हमको इस युग का भगवान दिखता है।
और भक्त को हर शंका का समाधान दिखता है।।
आचार्य विमलसागर तुम्हारा नाम लेने से -२
जो काम था पहले मुस्किल वो आसान दिखता है।।

जिस करूणा से काया तीर्थंकर बनती है, वो करूणा तुम्हारे हृदय में वसती है तुम अवतारी बन प्रकट हुए हो भारत भूमि पर-२, तुझमें हमको हमारा वर्धमान दिखता है।

श्री मुख से-
श्री मुख से जो निकले वो ग्रंथ बन जाये, जो वचनों को सुन ले वो संत बन जाये।
इन सत्य अटल वचनों का जादू जाने विश्व सकल,-२ तेरे अधरों पर जिनवाणी का वरदान दिखता है।
तेरे रूप में .....
तुम दिल की हर बातें पहिचान जाते हो, तुम भोले बाबा पल भर में सब मान जाते हो-२
वात्सल्य रत्नाकर तेरी कुटिया निराली है,-२ मंदिर में ऊँचा तेरा स्थान दिखता है-
तेरे रूप में हमको इस युग का भगवान दिखता है
और भक्त को हर शंका का समाधान दिखता है।
ये धारा विमल की विराग सागर हैं-२ वो भी इस युग के दूजे वात्सल्य दिवाकर हैं-२
चाहे करूणा देखो, समता देखो, देखो तप-चर्या-२ ये शिष्य गुरु का दर्शन एक समान दिखता है।
तेरे रूप में हमको इस युग का भगवान दिखता है
और भक्त को हर शंका का समाधान दिखता है।
आचार्य विमलसागर तुम्हारा नाम लेने से-२
जो काम था पहले मुश्किल वो आसान दिखता है।

सत्संगति

अपने गाँव में कोई मुनिजन हैं तो उनके दर्शन करना, प्रवचन सुनना, उन्हें आहार दे या देखकर ही भोजन करना चाहिए।

१. यदि अपने ग्राम में कोई मुनिजन या माताजी विराजमान हैं तो उनके दर्शन अवश्य करना चाहिये।
२. उनके प्रवचन भी अवश्य सुनना चाहिए।
३. प्रवचन सुनने से ज्ञान की चार बातें सुनने को मिलती है।
४. प्रवचनों का संस्कार हमारे जीवन पर पड़ता है और वह बुराईयों से बचकर अच्छाईयों की ओर बढ़ता है।
५. धार्मिक लोगों से परिचय होने से उनकी अच्छाईयाँ देख उन जैसा बनने की प्रेरणा उत्साह व साहस मिलता है।
६. मित्रता, संगठन, सहयोग तथा सेवा करने का अवसर मिलता है।

संस्कार सुरभि से साभार

सौहार्द्रता अपनायें

व्यवहारिक गुण, हृदय में सौहार्द्रता उत्पन्न कराने वाले होते है, जैसे कि घर के सदस्यों में सभी का एवं समूह में सभी साधकों का क्षयोपशम समान नहीं होता न योग्यताएँ समान होती न गुण, कुछ न कुछ हीनाधिकता मिलती है। जैसे हाथ की पांच अंगुलियाँ बराबर नहीं होती। ध्यान दें। फिर भी सबका अपना विशेष महत्व होता है। जो काम एक अंगुली कर सकती है वह काम अंगूठा नहीं कर सकता। जो अंगूठा कर सकता है वह अंगुली नहीं। सभी का कार्य प्रथम एवं विशेष होता है। मगर वे एक दूसरे के कार्य में सहायक सिद्ध होते है, यदि सभी एक हो जाय तो मुक्के का आकार बन जाता है। जो संकेत करता है कि कोई काम नहीं हैं। हमें भी अपने साधर्मी की कमजोरी को हीन क्षयोपशम ज्ञान को देखकर दिल्लगी नहीं करनी चाहिए बल्कि उसके अन्य अच्छे गुणों को देखना चाहिये, यही है सौहार्द्रता। आपसी प्रेम को कायम रखने वाले सूत्रों से सभी का सम्मान व प्रतिष्ठा बनी रहती है क्योंकि संसार में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो मात्र गुणों का ही पिण्ड हो उसमें भी एक न एक दुर्गुण तो रहता ही है। अत: गुणा व गुण के चलते जो साधक अन्य साधक एवं श्रावकों के प्रति हृदयावनत बना रहता है वह ही सौहार्द्रता की झलक प्रदान कर पाता है।

समयोचित शिक्षायें से साभार

सच्चे साधक

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

सच्चे साधक की
एक ही भावना,
कैसे शमन हो
भव-भव की वासना।
बस यही लक्ष्य
यही भावना
कैसे मिले
शुद्धात्माराधना,
अवशेष है
बस इतनी भावना।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमश: शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. वीरेन्द्र कुमार जैन,(वीरू) देवेन्द्रनगर

बड़े भाग्य से नर तन पाया इसके हित का मनन करो,
पल पल तेरी आयु बीते अब तो प्रभु का भजन करो।
यह ऐसा दुर्लभ मोती जो मिलता नहीं दुबारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

पतित हुए को पावन करने गुरु की बहुत जरूरत है,
इस कलियुग की धरा में गुरुवर महावीर की मूरत हैं।
वर्तमान के वर्धमान है कहता ये जग सारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

गुणग्राही बनकर गुरुवर के गुणस्तवन को गाते हैं,
गाते गाते हम ये बच्चे प्रेम का गीत सुनाते हैं।
वीर प्रभु के काम को जिनने सभी जगह विस्तारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

यह संसार है इंद्रजाल सम इसको समझ नहीं पाया,
जो दिखता है वह नहीं होता कैसी यह अद्भुद माया।
इस माया में पड़कर मानव फिरता मारा मारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

व्यसनमुक्ति अभियान चलाया शाकाहार का करें प्रचार,
सारे जग में आज हो रही गुरुदेव की जय जय कार।
गुरु का हर सपना पूरा हो, ये ही भाव हमारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

फेरों के फेरे में पड़कर अपना सब कुछ खोया है,
अब पछाताये होत क्या पगले मिला वही जो बोया है।
अब आगे का जतन तू करले गुरु ने यही उवारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

हे गुरुवर मैं लिखूँ क्या तुम पर यह मुझमें सामर्थ्य कहाँ,
जो नर गुरु से विमुख रहा है उसका जीवन व्यर्थ यहाँ।
चित्त में अपने गुरु चित्र का ये चारित्र उतारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

शीतल नहीं है चंदन चंदा शीतल हिम न नीर हैं,
ये सब तन को शीतल करते हरते उसकी पीर हैं।
अन्तर्मन शीतल करने गुरु शीतल बहती धारा है,
विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

जनवरी माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.१.१९७२	हरदुआ खमरिया, श्रमण श्री विनिश्चल सागर जी मुनिराज
पुण्य तिथि	१.१.१९९५	सागर (म.प्र.) मुनिश्री विसर्गसागर जी
जन्म दिवस	१.१.१९४९	ललितपुर (म.प्र.) क्षुल्लक श्री विश्वप्रभु सागर जी
पुण्य तिथि	२.१.२००८	उदगांव कुंजवन (महा.) आर्यिका विशान्तश्री माता जी
पुण्यतिथि	३.१.२००५	करगुवां जी (उ.प्र.) श्रमण श्री विश्वभूति सागर जी
पुण्य तिथि	४.१.२०१९	दरगुवां (म.प्र.) मुनिश्री विश्वरत्न सागर जी
पुण्यतिथि	६.१.२०१८	मवाना (उ.प्र.) श्रमण श्री विश्वाहर्श सागर जी
जन्म दिवस	७.१.१९७२	सलेहा (म.प्र.) गणिनी आ. विन्ध्यश्री माताजी
जन्म दिवस	७.१.१९९८	वासोहा (म.प्र.) श्रमणश्री प्रशम सागर जी महाराज
पुण्यतिथि	१०.१.१९९८	भिण्ड (म.प्र.) श्रमणश्री विनिग्रह सागर जी महाराज
जन्म दिवस	१०.१.१९८०	दुर्ग (छ.ग.) श्रमणश्री सुयशसागर जी महाराज
पुण्यतिथि	१४.१.२०१८	कविनगर (गाजि.) आर्यिका विदर्भश्री माता जी
आचार्य पद प्रतिष्ठा माघ कृ-३	१३ जनवरी	महसाणा (गुज.) पू.आ. श्री सन्मतिसागर जी महाराज
जन्म दिवस	१४.१.१९७८	सिरसागंज श्रमणी आर्यिका विपश्यनाश्री माता जी
जन्म दिवस	१४.१.१९४०	ईडर (गुजरात) क्षुल्लिका विप्रदाश्री माताजी
जन्म दिवस	१४.१.१९२६	गिदवाहा (म.प्र.) क्षुल्लिका विरजश्री माताजी
जन्म दिवस	१५.१.१९५२	पोरसा, मुनिश्री विश्वानन सागर जी
पुण्य तिथि	१९.१.२०११	खांदु कॉलोनी (राज.) आर्यिका वीरश्री माता जी
दीक्षा दिवस	१८.१.२०१५	दमोह (म.प्र.) श्रमण श्री विरंजन सागर जी
पुण्य तिथि माघ.कृ.-६	१६ जनवरी	महसाणा (गुजरात) पू. आ. महावीर कीर्तिसागर जी महाराज
जन्म दिवस	२१.१.१९७९	ललितपुर (उ.प्र.) श्रमणी आ. विनतश्री माताजी
दीक्षा दिवस	२१.१.२००३	श्रेयांसगिरि (म.प्र.) ऐलक श्री विनिश्चल सागर जी, ऐलक श्री विश्वेस सागर जी
पुण्य तिथि	२२.१.२०११	खांदु कॉलोनी (राज.) श्रमणी आर्यिका विरक्तश्री माताजी
जन्म दिवस	२२.१.१९८६	सिवनी (म.प्र.) श्रमणी आ. विदितश्री माता जी
जन्म दिवस	२४.१.१९८६	कारंजा (महा.) श्रमणश्री विशौर्य सागर जी महाराज
दीक्षा दिवस	२६.१.१९९७	शहडोल (म.प्र.) श्रमण श्री विशेषसागर जी मुनिराज
पुण्य तिथि	२७.१.२०१०	तारंगाजी (गुजरात) श्रमण श्री विश्वदृढ सागर जी
दीक्षा दिवस	२८.१.१९९५	मंगलगिरि सागर (म.प्र.) क्षु. विभवसागर जी, क्षुल्लक विहित सागर जी, क्षुल्लक विमदसागर जी
पुण्य तिथि	३०.१.२०१४	मडावरा (उ.प्र.) श्रमण श्री विश्वमूर्ति सागर जी
पुण्य तिथि	३०.१.२०१९	रांची (झारखण्ड) मुनि श्री विश्वध्येय सागर जी

पौष माह के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

१३ दिसम्बर २०१९	पौष कृष्ण २	श्री मल्लिनाथ जी कल्याण
१९ दिसम्बर २०१९	पौष कृष्ण ८	अष्टमी व्रत
२२ दिसम्बर २०१९	पौष कृष्ण ११	श्री चन्द्रप्रभु जन्म कल्याणक
२२ दिसम्बर २०१९	पौष कृष्ण ११	श्री पार्श्वनाथ जी जन्म तप कल्याणक
२५ दिसम्बर २०१९	पौष कृष्ण १४	श्री शीतलनाथ जी ज्ञान कल्याणक चतुर्दशीव्रत
३ जनवरी २०२०	पौष शुक्ल ८	अष्टमी व्रत
५ जनवरी २०२०	पौष शुक्ल १०	श्री शान्तिनाथ जी केवलज्ञान कल्याणक
६ जनवरी २०२०	पौष शुल्क ११	श्री अजितनाथ जी केवलज्ञान कल्याणक
८ जनवरी २०२०	पौष शुक्ल १३	रोहिणी व्रत
९ जनवरी २०२०	पौष शुक्ल १४	चतुर्दशीव्रत, श्री अभिनन्दन नाथ जी ज्ञान कल्याणक
१० जनवरी २०२०	पौष शुक्ल १५	श्री धर्मनाथ जी ज्ञान कल्याणक

हँसते रहो हँसाने के लिए

1. **नाई** – बाल कटवाना है तो ५/– दो
   व्यक्ति – २/– दूँ तो ?
   नाई – आधे काटूँगा, आधे तुम काट लेना।
2. **एक जगह लिखा** – नकल से सावधान।
   व्यक्ति ने नीचे लिख दिया– सावधान से नकल।
3. **अमीर ने घर के बाहर लिखाया** – कुत्ते से सावधान।
   चोर ने लिख दिया – मालिक के लिए लागू है, चोर के लिए नहीं।
४. **राकी** – मुझे डांस सीखना है।
   सर – तुम नहीं सीख सकते।
   राकी – क्यों ?
   सर – तुम्हारे हाथ में कला नहीं है।
   राकी – थोड़ा सिखा दो फिल्म ऐक्टर बनूँगा।
   सर – सूरत सही नहीं है।
   राकी – लगता है आपको डांस नहीं आता, क्या सिखाओगे।

मनाली जैन , गया

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

समाचार

सानंद सम्पन्न हुई प्रोफेशनल नैतिक, आध्यात्म दृष्टिकोण सेमीनार

कोलकाता के बेलगछिया उपवन में चातुर्मासरत अध्यात्म योगी परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में प्रोफेशनल नैतिकता, आध्यात्म दृष्टिकोण सेमीनार सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ने मंगल उद्‌बोधन देते हुए कहा- जीवन जीने की दो शैली हैं अर्थ, और परमार्थ। संसार का प्राणी प्राय: अर्थ की ओर दौड़ रहा है। उसकी सोच अर्थ पर ही टिकी हुई है व्यक्ति का मानना है कि अर्थ के अभाव में जीवन नहीं जिया जा सकता किन्तु सर्वथा ऐसा नहीं है। संसार में रहकर भी निर्ग्रंथ संत परमार्थ जीवन जीते हैं उनके लिए अर्थ अनर्थकारी कहा गया है वे अर्थ (रूपयो) का स्पर्श भी नहीं करते। वे भाग्य पर निर्भर रहते हैं आहार मिलेगा तो करेंगे वह भी अपने नियम विधि के अनुसार मिलेगा तो अन्यथा आहार नहीं करेंगे। फिर भी उन्हें जीवन भर तक आहार मिलता है और उस आहार से वे परमार्थ की साधना करते हैं। आप दोनों हाथ से कमाते हैं फिर भी एक हाथ से खाते हैं लेकिन संतजन एक भी हाथ से नहीं कमाते फिर भी दोनों हाथ से खाते हैं। (वे वर्तन के त्यागी होते है अपने दोनों हाथ की अंजुलि बनाकर उसी में आहार लेते है) इसलिए यह सिद्ध होता है कि बिना अर्थ के भी जीवन चल सकता है लेकिन वह निर्ग्रन्थ संत का ही चल सकता है।

ग्रहस्थ जीवन जीने के लिए अर्थ आवश्यक है अर्थ बिना ग्रहस्थ का कोई मूल्य नहीं है किन्तु वह अर्थ दो प्रकार से अर्जित किया जाता है न्याय और अन्याय। नैतिकता तो यही कहती है कि हम न्याय पूर्वक धनोपार्जन करें क्योंकि न्याय के धन से प्राप्त रूखी रोटी भी हल्वा पूड़ी का कार्य करेगी और व्यक्ति के जीवन में सुख शांति प्रदान करेगी। लेकिन जो धन अन्याय से कमाया गया है उससे बने पकवान भी रूखी रोटी का कार्य नहीं कर सकते और न मन में उतनी सुख शांति प्रदान कर सकते हैं इसलिए जितना भी धन कमाओं न्याय पूर्वक कमाओ।

पूज्य श्री ने कहा- विश्व में सुख शांति देने वाला अर्थ शास्त्र दिगम्बर मुनिराजों के कमण्डल में समाया हुआ है। मुनियों के कमण्डल में पानी डालने (भरने) का मुख बड़ा होता है ओर निकलने का मुंख छोटा होता है। जो व्यक्ति इस सिद्धान्त को अपना ले उसे अन्याय करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। आज का व्यक्ति जितना कमा नहीं पाता उतना अधिक खर्च करता है इसलिए अन्याय की ओर उसकी प्रवृत्ति होने लगती है जबकि प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें। अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह न करें जितनी आय है उससे कम व्यय करें तो आपका जीवन सुखमय बन सकता है। यही सूत्र जीवन में नैतिकता उत्पन्न कर देगा।

जब हम लोग गुजरात ईडर में थे तो महावीर जयंति के कार्यक्रम में अरविंद त्रिवेदी जी आये जिन्होंने रामायण में रावण का रोल किया था उन्होंने आते ही कहा- आज रावण संतों के चरणों में आ गया है तो वह रावण नहीं राम बन गया है आज से मैं समस्त बुराईयों का त्याग करता हूँ।

व्यक्ति रावण को बुरा मानते हैं उसके पुलते जलाने हैं जबकि मेरा सोच है रावण के पुतले नहीं रावण वृत्ति को दहन करें उसे खत्म करें तो रावण की उत्पत्ति ही नहीं हो सकेगी और इसी के साथ दिन में कुछ ऐसा समय निकाले जिस समय हम शांति से बैठकर अपने विषय में सोचे कि हमारी वृत्ति कहीं रावण वृत्ति तो नहीं बन रही है अनैतिकता की ओर तो नहीं जा रही है इसका ध्यान रखे तो निश्चित ही अध्यात्म की ओर भी हमारे कदम बढ़ सकते हैं और जीवन शाश्वत सुख शांति मय बन सकता है।

इस अवसर पर आगत सी.ए. प्रोफेशर्स आदि में प्रमुख रूप से श्री सुमेर चन्द्र जी चूड़ीवाल, श्री सन्तोष जी सेठी, श्री सुशील जी गोयल, श्री रीतेश जी मोर, श्री जीतू जी लोहिया, श्री राजेश जी, श्री कमलजी, क्षुल्लिका विज्ञप्ति श्री माताजी, मुनिश्री विकौशल सागर जी महाराज, मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ने तद विषय अपने अन्त में प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा समीक्षात्मक उद्‌बोधन के साथ सभी का मार्ग दर्शन किया एवं अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

सभा में मंगलाचरण श्रीमती नीलम जी छावड़ा एवं श्रमणी आर्यिका विश्वास श्री माताजी द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन श्री जीतू जी लोहिया, देवेन्द्र जी सरावती, श्री सुशील जी गोयल, श्री रीतेश जी, श्री महावीर जी गंगवाल, श्री राजेन्द्र जी सेठी, श्री सोनू जी जैन आदि द्वारा किया गया।

मंच संचालन श्री विकाश जी छावड़ा एवं श्री विजय जी सरावनी द्वारा किया गया। अन्त में आभार प्रदर्शन श्री मनीष जी गंगवाल द्वारा किया गया।

भगवान महावीर स्वामी जी का निर्वाण महोत्सव मनाया

२८ अक्टूबर २०१९ को श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ उपवन मंदिर बेलगछिया में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ एवं पू. मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ की ६४ पिच्छीओं के पावन सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी जी को अभिषेक शान्तिधारा पूजन कर भक्ति पूर्वक निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। आज के दिन वीर निर्वाण सं. २५४६ का शुभारंभ हुआ। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव का निर्वाण लाडू का मंत्र अपने मुखार बिंद से उच्चारण किया साथ ही धर्मोपदेश के साथ सभी को अपना मंगल आशीष दिया।

साथ ही तीन संघो का मंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान पूर्वक चातुर्मास निष्ठापन क्रिया सम्पन्न हुई।

६४ पिच्छिओं के विशाल चतुर्विध संघ का हुआ पिच्छी परिवर्तन

२९ अक्टूबर २०१९ को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन उपवन मंदिर बेलगछिया कलकता में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ एवं पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ कुछ ६४ पिच्छियों के विशाल चतुर्विध संघ का भव्य पिच्छिका परिवर्तन सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मण्डल द्वारा-चित्र अनावरण ब्र. श्री कैलाश जी सेठी, श्री महावीर जी गंगवाल आदि द्वारा दीप प्रज्वलन श्री माल चन्द्र जी बड़जात्या श्री सम्पत जी छावड़ा श्री मुन्नाभैया, श्री मालू जी वडजात्या, कैलाश जी बडजात्या द्वारा किया गया। पं. कमल कुमार जी शास्त्री द्वारा सम्पूर्ण चातुर्मास की सफलता में सभी के सहयोग का गरिमापूर्ण व्याख्यान किया गया।

चातुर्मास में चौका व्यवस्था, आहार व्यवस्था वैय्यावृत्ति और अन्य अन्य प्रकार से चातुर्मास को सफल बनाने में तन मन धन से सहयोग करने वालों का तथा चातुर्मास मंगल कलश स्थापित करने वालों में प्रथम मंगल कलश स्थापना कर्ता श्री निर्मल जी पुष्पा विंदायका का सम्मान किया गया। प.पू. गणाचार्य श्री की कर कमलों से उन्हें मंगल कलश प्रदान किया गया। मुनि संघ व्यवस्था समिति ने सभी कार्यकर्त्ताओं का किया।

गया से श्रमणी आर्यिका विबोध श्री माताजी , फतेहपुर से श्रमणी आर्यिका विविक्तश्री माता जी, प्रयाग राज से श्रमणी आर्यिका विकाम्या श्री माता जी, द्वारा पू. गुरुदेव के लिये भेजी गई पिच्छी श्रावकों द्वारा भेंट की गई।

पूर्व में समय समय पर पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज द्वारा भिण्ड से, निवाई से श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी द्वारा, रायपुर से पू. श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी द्वारा अलवर (राजस्थान) से पू. श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी द्वारा, कटक उड़ीसा से श्रमण श्री विश्वेश सागर जी द्वारा, दहीगांव (महाराष्ट्र) से श्रमण श्री विनिश्चल सागर जी द्वारा लोहारिया से श्रमण श्री विकसंत सागर जी द्वारा, हुवली (कर्नाटक) से गणिनी आर्यिका विशाश्री माता द्वारा, गोहाटी से गणिनी आर्यिका विन्ध्यश्री माताजी द्वारा, दिनहढा से श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री माताजी द्वारा, पू. गुरुदेव के लिये भेजी गई पिच्छियाँ ब्रह्मचारी भैया बहिनें एवं श्रावकों द्वारा पूज्य गणाचार्य श्री को भेंट की गई।

प.पू. गणाचार्य श्री का पादप्रक्षालन करने का सौभाग्य प्रीमियम ग्रुप को प्राप्त हुआ एवं शास्त्र भेंट श्रीमती लक्ष्मी जैन श्रीमती अचला जी जैन श्री महेन्द्र जी जैन आगरा द्वारा किया गया। गुलाववाडी मुंबई से आये श्रावकों द्वारा भी पू. गुरुदेव को शास्त्र भेंट किया। पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी को श्री गजराज जी काशलीवाल द्वारा शास्त्र भेंट किया।

प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा अपने अमृतमयी उद्‌बोधन में पिच्छी भेंट करने एवं पुरानी पिच्छी ग्रहण करने के महत्व एवं फल का व्याख्यान किया गया। चातुर्मास में सभी के सहयोग की सराहना करते हुए साधु साध्वियों द्वारा १४५७ उपवास २२६ नीरस आहार एवं ३८९३५०५६ जाप तथा चारों अनुयोगों के स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन करने का उल्लेख किया गया।

कोलकाता जैन समाज में महिलाओं द्वारा विराग सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर में गोम्मटसार कर्मकाण्ड, तत्वार्थसूत्र, चौबीस ठाणा, बाल विज्ञान आदि में सभी की उत्साह पूर्वक उपस्थिति की सराहना की। श्रावक साधना शिविर में भी सभी ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। अन्त में पिच्छी के गुणों का वर्णन करते हुए सभी को अपना मंगल आशीष दिया।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के लिये श्री दिग. जैन मुनि संघ व्यवस्था उपसमिति द्वारा लाई गई पिच्छी को ब्रह्मचारी भैया व बहिनों संघस्थ साधुओं को प्रदान की जिसे सभी महाराज व माताजियों ने पूज्य गणाचार्य श्री के कर कमलों में भेंट की। प.पू. गणाचार्य श्री की पुरानी पिच्छी को प्राप्त करने का सौभाग्य श्रीमती ममता सेठी धर्मपत्नी श्री अशोक जी सेठी चौरंगी को प्राप्त हुआ। पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज की पिच्छी ५१३ विधान समिति द्वारा लाई गई जिसे पू. गणाचार्य श्री द्वारा आ. सुबलसागर जी को प्रदान की गई। सभी साधु साध्वियों की नई पिच्छी भेंट करने एवं पुरानी पिच्छी ग्रहण कर्ताओं की सूची निम्मनानुसार है। लगभग ३०० से अधिक श्रावकों द्वारा नई पिच्छी भेंट करने एवं पुरानी पिच्छी ग्रहण करने के लिये नियम लेकर आवेदन गये थे। सभी माताजी व महाराजों का बड़ी ही शालीनता के साथ पिच्छी परिवर्तन सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में भाग लेने अनेक स्थानों से श्रद्धालुगण पधारे। आयोजन समिति ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्पूर्ण संघ को पिच्छी भेंट कर्ता एवं पुरानी पिच्छी को ग्रहण करने वाले सौभाग्य शालीओं की सूची निम्नानुसार है–

भव्य पिच्छी परिवर्तन २०१९

पिच्छी भेंट करने वाले एवं ग्रहण करने वाले सौभाग्यशाली

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
१.	प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज	श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति (उपसमिति), सभी मंदिरों के ट्रस्टीगण ५१३ विधान के अध्यक्ष ब्रह्मचारी भैया व बहिनें चतुर्विध संघ	श्रीमान अशोक जैन (सेठी) श्रीमती ममता जैन मो. ८९६१३६५१९९, ८३४८०४२७६३
२.	प.पू. आचार्य श्री १०८ सुबलसागर जी महाराज	५१३ विधान समिति	श्रीमान दीपक कुमार जैन, श्रीमती पूनम जैन मो. ९३३९२७७०५
३.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ सुपार्श्वसागर जी महाराज	सुपार्श्वसागर सेवा समिति	बा.ब्र. शुभम जैन
४.	प.पू. श्रमण मुनि श्री १०८ विहित सागर जी महाराज	श्रीमती सुधा जैन(लेक प्लाजा), श्री प्रशांत जैन (बेलगछिया), श्रीमती नीरू जैन (बेलगछिया), श्री पिंकी बज (बंगवासी), श्री भरत गंगवाल	श्रीमती किरण जैन गंगवाल द्वारा कमल कुमार गंगवाल, ४१ डवसन रोड हावड़ा मो. ९८३०९४३२५०, ९३३११९४३२३

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
५.	प.पू. श्रमण मुनि श्री १०८ विश्वलोचन सागर जी महाराज	श्री हेमन्त कुमार जैन (श्याम बाजार), श्री अंकेश जैन (उत्तरपाड़ा), श्रीमती शांति देवी पहाड़िया (काकुड़गाछी), श्रीमान पवन गंगवाल, श्रीमान महेन्द्र पाटोदी (काकुड़गाछी)	श्रीमती कुसुम छाबड़ा द्वारा सम्पत जी छाबड़ा, नं. २२ ली रोड कोलकता चौरंगी मंदिर मो. ९८३६५१०८६५
६.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विवर्धन सागर जी महाराज	अरिहन्त जैन (डवसन), नवनीत जैन (बंगवासी), जतिन जैन (श्याम बाजार), श्रीमती ममता सेठी, श्रीमती रेखा सेठी (बड़ा बाजार)	श्रीमान संतोष सेठी-श्रीमती मंजू सेठी ४९३/सी-१ ए-१ विवेक विहार हाबड़ा मो. ९३३९६०४२८०, ९०३८१३१३६२
७.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वविदसागर जी महाराज	श्रीमती मिथलेश जैन (श्याम बाजार) श्रीमती डोली कुमारी जैन (उत्तरपाड़ा) श्रीमती सोनिया (फूलबगान) श्रीमती रीता पहाड़िया द्वारा- श्रीमान मुन्ना पहाड़िया।	श्रीमती लाडो जैन सतभैया, द्वारा- सचिन जैन सतभैया, मैन मार्केट पाली, जिला-ललितपुर मो. ९५५९९२५०९९
८.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विदाम्बर सागर जी महाराज	श्रीमती शीला देवी जैन (कोलकाता), श्रीमती शीला जैन (लेकटाउन) श्रीमान विमल जी ठोल्या, श्रीमान प्रकाश ठोल्या, श्रीमती कविता ठोल्या।	श्री अशोक पाण्ड्या, श्रीमती अनीता पाण्ड्या बाहुवली, काकुड़गाछी मो. ९८३०२७६९१८, ७००३६४२३२४
९.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वमित्र सागर जी महाराज	प्रियंका जैन (उत्तरपाड़ा) आशा जैन (उत्तरपाड़ा) श्रीमान प्रकाश चंद इन्द्रामणी बड़जात्या (बड़ा बाजार) श्रीमती आशा सेठी (लेकटाउन) श्रीमती पर्वती देवी जैन (कोलकाता)	श्रीमती मीना-विजय कुमार जैन, बड़ा बाजार
१०.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विधेयसागर जी महाराज	महेन्द्र कुमार जैन (आगरा) श्रीमती लक्ष्मी जैन, श्रीमती हेमा जैन (काकुड़-गाछी) श्रीमती सुशीला देवी (राहिवलेन)	श्रीमान सीए सुधीर जैन द्वारा- श्री नेमीचंद जैन लेक प्लाजा २७७ जेसर रोड मो. ९८३०३८०४४०
११.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वाक्षर सागर जी महाराज	श्रीमती उर्मिला देवी पाण्डया (हावड़ा) श्रीमती अंजली जैन (उत्तरपाड़ा) श्रीमती चन्द्रा जैन (काकुड़गाछी) श्रीमती सुलेखा पाटनी (दमदम) श्रीमती खुशबू पाटनी (दमदम)	श्रीमती मंजू जैन पाटनी द्वारा- रनेश कुमार जैन, ६ शरद बॉक्स रोड अन्नपूर्ण ऑप्ट. ६वी फ्लोर

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
१२.	प.पू. श्रमण मुनि श्री १०८ विशौर्यसागर जी महाराज	श्रीमती सुशीला देवी (नगीना कटरा), सन्तोष देवी जैन (सॉल्टलेक), श्रीमती प्रभा जैन (श्याम बाजार), श्रीमती कल्पना बड़जात्या, श्रीमान अजय बड़जात्या (विक्रम विहार)	श्रीमती इन्द्रा देवी द्वारा- राजकुमार जी बड़जात्या दमदम मो. ९३३९७२११८१
१३.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वनायक सागर जी महाराज	कनवरी देवी जैन (हाबड़ा) श्रीमती पुष्पा देवी पाटनी, श्रीमती नीलम जैन (डनलव रथतल्ला) श्रीमती नीता जैन (विधान सरनी) श्री विजयजैन (बांगुर)	श्रीमती सरला पाटनी द्वारा- स्व. श्री सुरेश पाटनी स्ट्राण्ड रोड एक तल्ला कोलकाता
१४.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विकौशल सागर जी महाराज	श्रीमती नीलम जैन (बंगवासी) श्रीमती कविता जैन (नगीना कटरा), कु. रंगोली जैन, श्रीमती सविता जिनेन्द्र कुमार जैन (गोकुल धाम)	श्रीमान तेजपाल जैन, श्रीमती पुला देवी जैन, २२ रामलाल मुखर्जी लेन दावदा मो. ९८३००१४९८१
१५.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ असंग सागर जी महाराज	श्रीमती जयदेवी जैन (नलिनी सेठ रोड) श्रीमती दाखा देवी पाटनी, श्रीमान सुधीर चुड़ीवाल, कुसुम चूड़ीवाल	श्रीमान संतोष सेठी (सिद्धायतन) श्रीमती ललिता सेठी
१६.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ अनंग सागर जी महाराज	श्रीमती मंजू देवी अजमेरा (फूलबगान) श्रीमती सुन्दरी जैन (श्याम बाजार) श्रीमती अंजना जैन (प्लाम एवनी)	श्रीमान जय कुमार काला श्रीमती सुलोचना काला
१७.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विनयंधर सागर जी महाराज	श्रीमान धरमचन्द्र सेठी (बी.आई.पी. रोड) श्रीमती आशा देवी (भटटाचार्य लेन) अग्रिम जैन - अनुज जैन (मनिकतल्ल) श्रीमती कमलाबाई जी (हरदुआ)	श्रीमती मुन्नी देवी, दिलीप कुमार जैन १७/१ जैन कुंज गोपी कृष्णा पोललेन जोराबगान के पास पॉवर हाउस कोलकाता मो.
१८.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वदक्ष सागर जी महाराज	श्रीमान शिवकुमार जैन (श्यामा बाजार) श्रीमती शशी जैन (मोटीजील) श्रीमान मिलापचंद गंगवाल (हावड़ा)	श्रीमान विनोद कुमार ठोल्या द्वारा- कांतिलाल ठोल्या २३/ए, महर्षि देवेन्द्र रोड़ कलकत्ता
१९.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वभानु सागर जी महाराज	श्रीमती प्रेमदेवी जैन (मानसरोवर जयपुर) श्रीमती पुष्पादेवी (बड़ा बाजार) श्रीमती सोना जैन (मोहन लाल स्ट्रीट) सुजाता जैन, अलका जैन	श्रीमती कनकमाला जैन द्वारा- सुशील कुमार जैन २ तल्ला ब्लाक डी, हावड़ा मो. ९८३०९७८२००

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
२०.	प.पू. श्रमण मुनि श्री १०८ विश्वहित सागर जी महाराज	श्रीमती कुसुमलता जैन (बाबूलेन), श्रीमती ऊषा जैन (लेकटाऊन), श्रीमान सुभाष जी पाण्डया, मृदुला कन्नौडिया (चौरंगी)	श्रीमती अनीता, संदीप कुमार गंगवाल पंचशील बिल्डिग २१/ एच गोराचंद आर.डी. पार्क कोलकाता-१४ मो. ९८८३५८८८८९
२१.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वधीर सागर जी महाराज	श्रीमती शोभा जैन (उत्तरपाड़ा), श्रीमती संगीता जैन (उत्तरपाड़ा) हर्ष जी जैन (बेलगछिया), श्रीमान संजय गोधा, श्रीमती शशि गोधा (बांगुर)	श्रीमती मीना देवी, द्वारा- श्री प्रदीप जैन कोलकाता
२२.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वभद्र सागर जी महाराज	श्रीमान टीकम जी बड़जात्या (डवसन) श्रीमती शांति देवी बड़जात्या (डवसन), देवेश जैन (श्याम बाजार) श्री संदीप, सुमन काला (बंगवासी)	श्रीमान तेजपाल जैन, श्रीमती पुला देवी जैन, २२ रामलाल मुखर्जी लेन दावदा मो. ९८३००१४९८१
२३.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विनिवेष सागर जी महाराज	श्रीमती तारामणी पाटनी श्रीमती प्रमिला विनायका (डवसन), श्रीमती नेहा गुड्डू जैन (फूलबगान) श्रीमती अनीता पाटनी द्वारा- संजय पाटनी (दमदम)	श्रीमती सुधा जैन पत्नी डॉ. ए.के. जैन सी.डी २९५ सॉल्टलेक कोलकाता
२४.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वानन सागर जी महाराज	श्रीमती किरण बाई गंगवाल (श्री कुंज) (डवसन) श्रीमान बाबूलाल जी बगड़ा, श्रीमती नेहा-सुमित जैन (फूलबगान) श्रीमती इन्द्रा बड़जात्या (डवसन)	श्रीमती पानादेवी रारा पत्नी मंगलचंद जी रारा १ नं. दर्प नारायण टैगोर स्ट्रीट मो. ९८३००२०६६३
२५.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विश्वानुत्तर सागर जी महाराज	श्रीमती उर्मिला गंगवाल (डवसन), श्रीमती सुनीता गोधा श्रीमती आशा पाण्ड्या (डवसन), श्रीमती ऊषना काला पत्नी अशोक काला (हावड़ा)	श्रीमती दिलीप बगड़ा पुत्र सूरजमल बगड़ा १३४ सलकिया स्कूल रोड सुखी संसार हाबड़ा - ७१११०६ मो. ९८३०१३२६९१
२६.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विशल्य सागर जी महाराज	श्रीमती मैना देवी (दमदम), श्रीमती ऊषा सावलावत (बड़ा बाजार), श्रीमती राजमती काला, श्रीमती सुषमा छाबड़ा	श्री राजकुमार बाकलीवाल श्रीमती नीलम बाकलीबाल ३१ महर्षि देवेन्द्र रोड कोलकाता मो. ९९०३३४९६७४
२७.	प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विनिबोध सागर जी महाराज	श्री मुकेश कुमार जैन (रिसड़ा), श्री सुबोध पाटनी (इस्तहार), श्रीमती मीरा जैन पत्नी प्रद्युम्नकुमार जैन (बगला लेन), श्रीमती मंजूदेवी पत्नी सरोज कुमार जैन (नागर रोड)	श्रीमती अनीता दगड़ा, श्री राकेश दगड़ा १० नं. बोस रोड सरधगा बाजार हावड़ा बंगवासी मो. ९८०४८२३७१०

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
२८.	प.पू. श्रमण मुनि श्री १०८ विनिशोध सागर जी महाराज	श्रीमती जय श्री ठोल्या पत्नी पवन ठोल्या (नगीना कटरा), श्रीमती नीलम ठोल्या पत्नी प्रदीप कुमार ठोल्या (बड़ा बाजार) श्रीमती ऊषा पाटनी पत्नी हीरालाल पाटनी (मुखर्जी रोड)	नवीन बज बंगवासी कोलकात्ता
२९.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विशिष्टश्री माताजी	श्रीमती रूपदेवी सेठी (डवसन), श्रीमती ऊषा छाबड़ा (चौरंगी), श्रीमती शशि पाटनी, मंजू पाटनी (चौरंगी), अनीता गंगवाल (चौरंगी), कुसुम छाबड़ा, सरला पाटनी (बड़ा बाजार), किरण गंगवाल (डवसन), मंजू सेठी बंगवासी, पद्मा पाटोदी (काकुड़गाछी), सुमन (चौरंगी) रेनू-संजय कुमार जैन, श्रीमती सपना जैन (मिल्क कॉलोनी) ललिता सेठी (चौरंगी) गिनया देवी (काकुड़गाछी)	श्रीमती कविता जैन पत्नी स्व. श्री अनिल जैन कुमारी अंजली जैन (हावड़ा) मो. ९४३३८४५४७७
३०.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ चिन्तनमती श्री माताजी	श्रीमती सीमा-विशाल जैन (श्याम बाजार), श्रीमती प्रीति-दीपक जैन (श्याम नगर) श्रीमान पम्पी-सुनील जैन, श्रीमती मोनिया पाटनी श्री सुमित्र पाटनी (दत्ता स्ट्रीट)	श्रीमती सपना जै पत्नी मुकेश जैन मिल्क कॉलोनी मो. ८९८१९३३०७२
३१.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विजेताश्री माताजी	श्रीमती कनक काशलीवाल श्रीमती आशा जैन सिंघई (डवसन), चीनू विक्रम जैन (लेकटाउन) श्रीमती शशि जैन पत्नी पवन कुमार जैन (कलकत्ता)	श्रीमती प्रीति सोगांनी पत्नी जितेन्द्र सोगांनी २१० जेसर रोड लेकटाउन
३२.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विश्वास श्री माता जी	श्रीमती शशि कासलीवाल श्रीमती सम्पत देवी सेठी (डवसन), श्रीमती रीना मनोज जैन (नागर बाजार), श्रीमती संगीता अमित कुमार जैन (हाथी बगान)	श्रीमान् अजय जैन- श्रीमति बीना जैन ८९, विधान सरनी कोलकाता मो. ६२९०१३३६९५, ६२८९३७७९४१
३३.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विरम्याश्री माताजी	श्रीमती अरूणा जैन (डवसन), श्रीमती सुनीता जैन (डवसन) श्रीमती शालिनी जैन, विकास जैन, ऐश्वर्या जैन, अंकित पाटनी (हावड़ा)	श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्ड्या पुत्र स्व. श्री पुखराज जी पाण्ड्या फूलबगान मोर, बाटा सीप कोलकता फोन २३२०२२३३ मो. ९३३०६५८२१८

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
३४.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विप्राश्री माता जी	श्रीमती ऊषा जैन (डवसन), श्रीमती मंजू पोद्दार, सरोज जैन (श्याम बाजार) श्रीमती राजप्रभा सेठी (चौरंगी) श्रीमान रवीन्द्र कुमार जैन (उल्टा डांगा)	श्रीमति मधु जैन पत्नी आशीष जैन काकुड़गाछी, कोलकाता मो. ९६७४३९२१४७
३५.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ वियोजनाश्री माताजी	श्रीमति मुन्नी देवी जैन (डवसन) श्रीमति पिंकी जैन कासलीवाल, लोकेश जैन (श्याम बाजार) श्री भागचंद जैन, श्री संतोष काला (काकु.)	श्रीमति संगीता गंगवाल पत्नी सुनील कुमार जैन, प- १०४, बांगुड एवेन्यू ब्लाक ए कोलकाता
३६.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विसंयोजनाश्री माता जी	श्रीमति पुष्पा कासलीवाल (डवसन) श्रीमति मेघा बड़जात्या (डवसन) मनीष सेठी (काकुड़गाछी) श्रीमती समीक्षा पूनमचंद जैन (बारासिवनी)	श्रीमती निर्मला जैन, अवनी आक्सकार्ड ब्लॉक ४ लावी २ फेस १ फ्लेट ७ नं. १३६ जेसोर रोड़ कोलकता मो. ९८३६२५५८५२
३७.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विरक्षणा श्री माता जी	श्रीमती सारिका छाबड़ा (डवसन), श्रीमती संगीना बड़जात्या (डवसन), श्रीमती भारती छाबड़ा (रिसड़ा), कु. दीक्षा जैन, कु. महक जैन	श्रीमत निर्मला पाटनी पत्नी संतोष कुमार पाटनी शांति निकेतन अपार्टमेंट बंगवासी (हावड़ा) मो् ९८३०९११६८१
३८.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विदितश्री माताजी	श्रीमती प्रेमा जैन सिंघई श्रीमती ललिता सेठी, (डवसन), श्रीमति नीतू जैन (रिसड़ा) सिमरन (काकुड़गाछी)	श्रीमती अंजना जैन पत्नी अजय कुमार जैन पार्श्वनाथ कॉलोनी गया विहार मो. ९४७०४७०६३९
३९.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विदिताश्री माता जी	श्रीमती कनक पाण्ड्या (डवसन), श्रीमान सुशील जी पाण्ड्या (डवसन) संजू जैन (रिसड़ा) श्रीमती सरला जैन (बड़ा बाजार) श्रीमति प्रभादेवी पाण्ड.	श्रीमती कांता पाटनी पत्नी श्री पवन कुमार पाटनी (मोनिका पाटनी) २,३ ताराचंद दत्ता स्ट्रीट कोलकता मो. ९३३०९०४६४९
४०.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विभक्तश्री माता जी प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विसुव्रता श्री माता जी	श्रीमति विमला देवी बोहरा (डवसन) ममता जैन (रिसड़ा) श्रीमति कनक कासलीवाल (हावड़ा सलकिया) मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी सेवा समिति कोलकाता	श्रीमति सुधा जैन पत्नी महेश चंद जैन दमदम सूरजदेवी दगड़ा महेन्द्र कुमार दगड़ा सीधार पाड़ा सुन्दरी पार्क कोलकता
४१.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विजितश्री माता जी	श्रीमति रेखा ठोल्या पत्नी पवन ठोल्या श्रीमति रतनी देवी बड़जात्या, श्रीमति लता-पंकज जैन (श्याम बाजार)	श्री मनोज कुमार बगड़ा पुत्रा राजकुमार बगड़ा, हावड़ा मो. ९८३०१७३३४०

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
४२.	प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विकुन्दनश्री माता जी प.पू. श्रमणी आर्यिका १०५ विजिज्ञासाश्री माताजी	श्रीमान सुभाष जी सिंघई (डवसन) श्रीमती दीपिका जैन (दमदम) लव-कुश (काकुड़गाछी) श्रीमती सरोज जैन (लेकटाउन) मुनि श्री सुपार्श्वसागर सेवा समिति कोलकता	श्रीमती संगीता गंगवाल पत्नी दिनेश कुमार गंगवाल, १६७ एन.एस. रोड राजा कटरा कोलकाता मो. ९७७७४९६४०४ श्रीमती हेमा बड़जात्या कोलकाता
४३.	प.पू. ऐलक १०५ अकम्प सागर जी महाराज	श्रीमती मनोरमा गोधा (बंगुर) श्रीमती विनीता चूड़ीवाल (लेकटाउन) आकाश जैन (चौरंगी)	श्री कुलदीप जैन
४४.	प.पू. ऐलक १०५ विनियोग सागर जी महाराज	श्रीमति सरिता छाबड़ा (बंगुर) श्रीमती संगीता काला (डायमंड सिटी) श्रीमति मंजू जी पाण्ड्या (डवसन) विजय जैन पुत्र विनोद कुमार जैन (बंगुर)	श्रीमती मीरा जैन, स्व. श्री विनोद कुमार जैन १० आर जी कर रोड श्याम बाजार कोलकाता मो. ८३३६८५२५३९
४५.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विश्वभूषण सागर जी महाराज	श्रीमति कुसुम चूड़ीवाल (लेकटाउन), श्रीमती उर्मिला छाबड़ा (श्याम बाजार) श्रीमती शिमलेश जैन (उल्टा डांगा) श्री महावीर चांदूवाड (डवसन)	श्रीमान ज्ञानचन्द्र जैन १० आर गे.कर रोड श्याम बाजार कोलकाता मो. ८९८११७६२१०
४६.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विश्वबंधु सागर जी महाराज	श्रीमति माला काला (डायमंड सिटी) श्रीमति बबीता कासलीवाल (बेलगछिया) ऋषभ, कु. नताशा, कु. तनिष्का	श्रीमति चंद्रकला पाटनी पत्नी श्रवण कुमार पाटनी फेंच स्ट्रीट शिखर हावड़ा मो. ८२४०२०४८९१
४७.	प.पू. क्षुल्लक १०५ अनमोल सागर जी महाराज	श्रीमति शशि सेठी (बेलगछिया), श्रीमती सुनीता सेठी (लेकटाउन), कु. स्वस्तिका, स्तुति, ऋषभ	श्रीमति उषा पाटनी, श्री हीरालाल जी पाटनी, अन्नकुल मुखर्जी रोड कोलकाता मो. ९४३३३५४९५८
४८.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विश्वज्ञेय सागर जी महाराज	श्रीमति शालू बड़जात्या (दमदम), सोनू बड़जात्या (लेकटाउन), देशना जैन (बागुड़), कृष्टि जैन (बागुड़)	श्रीमती गुणमाला देवी पाटनी
४९.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विश्वरक्ष सागर जी महाराज	श्रीमति नीलम जैन (बेलगछिया), श्रीमती शशि जैन (श्याम बाजार) तपस्या जैन (दमदम) विधि जैन (दमदम)	श्रीमति निरंजना जैन चांदूवाड़, श्री महावीर प्रसाद जैन, ९/७ किन्स रोड नॉर्थ हावड़ा मो. ९८८३१४७१४९

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
५०.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विवक्षित सागर जी महाराज	श्रीमति ममता कासलीवाल (डायमंड सिटी) श्रीमति पिंकी जैन (पाटली पोखर), कु. तनिशा, कु. प्रिया, कु. सिद्धि	श्रीमति अनीता बाकलीवाल पत्नी श्री वीरेन्द्र जी बाकलीवाल नगीना सिंह का कटरा कोलकता मो. ९९०३५५९०२७
५१.	प.पू. क्षुल्लक १०५ अगण्य सागर जी महाराज	श्रीमति सरोज पाटनी (बेलगछिया), श्रीमती डिम्पल सेठी (दमदम), श्रीमती शोभा सेठी (दमदम)	ब्र. विभला देवी कोलकता
५२.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विश्वर्मादव सागर जी महाराज	श्रीमति रेणू जैन- सुनील जैन (श्याम बाजार) श्रीमती कमला कासलीवाल, श्रीमति निशा पाण्ड्या, कु. नित्या जैन पाण्ड्या	श्रीमान इन्द्रचन्द जैन (पाटोदी) श्रीमति शांति देवी जैन, नेताजी सुभाष रोड रिसड़ा, जिला- हुगली, (पं. बं.) मो. ९३३१८३४९००
५३.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विप्रदा श्री माता जी	श्रीमति श्वेता जैन (लेकटाउन), श्रीमती अनीता सेठी (एयरपोर्ट), श्रीमती सीमा सोगानी (डवसन), श्रीमति पम्पी विनायका (डवसन)	रक्षा शाह पुत्री शशिकान्त शाह २/१ खेलाल लेन कोलकाता मो. ९८३०७३४७५६
५४.	प.पू. क्षुल्लक १०५ विश्वबंधु सागर जी महाराज	श्रीमति माला काला (डायमंड सिटी) श्रीमति बबीता कासलीवाल (बेलगछिया) ऋषभ, कु. नताशा, कु. तनिष्का	श्रीमति चंद्रकला पाटनी पत्नी श्रवण कुमार पाटनी फेंच स्ट्रीट शिखर हावड़ा मो. ८२४०२०४८९१
५५.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विसुदृढ़श्री माता जी	श्रीमती नीतू जैन (बड़ा बाजार) श्रीमतान राकेश जैन (बड़ा बजार) श्रीमति अलका सोगानी (डवसन)	श्रीमान अशोक कुमार अरूणा देवी काला, हावड़ा मो. ९८३०२८७७०७
५६.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विरोचना श्री माता जी	श्रीमति सीमा जैन (बड़ा बाजार) श्रीमति हर्षा शाह, श्रीमान राकेश शाह, श्रीमति सुमन सोगानी (डवसन)	श्रीमान चैनसुख जैन पुत्र इन्द्रचन्द्र जैन श्रीमति सुलोचना देवी जैन, ६६ नलिनी सेठ रोड, कोलकाता मो. ९४३४४५८३८९
५७.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ सुश्रेयमती माता जी	श्रीमति विमला जैन (श्याम बाजार), श्रीमति सोना- वापी जैन (श्याम बा.) कु. आशिका, कु. आदी, कु. अर्चिता	श्रीमति कीर्ति जैन पत्नी श्री लवलेश कुमार जैन, कोलकाता मो. ८६१७७४११२८
५८.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विपद्माश्री माता जी	श्रीमति कनकमाला पाण्ड्या, श्रीमति अंजु कासलीवाल, संजय कासलीवाल, श्री महेन्द्र/मीना छावड़ा (काकुड़गाछी)	श्रीमती मनोरमा जैन पत्नी राजकुमार जैन लेकटाउन कोलकाता

क्र.	नाम	पिच्छी भेंटकर्ता	पिच्छी ग्रहणकर्ता
५९.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विकण्ठ श्री माता जी	श्रीमति विमला ठोल्या, श्रीमति ऊषा जैन (हावड़ा), श्रीमती पूनम जैन, कु. आस्था जैन, कु. तनिशा	श्रीमती अमराव देवी छाबड़ा कोलकता मो. ९३३०१७९५२४
६०.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विश्वसिद्धि श्री माता जी	श्रीमति सुधा काला (बंगवासी), श्रीमती सुशीला देवी (काकुड़गाछी), श्रीमती नीलम जैन	श्रीमति ज्योति जैन पत्नी विकास जैन ब्र. संजय जैन, न्यू दिल्ली -१९ मो. ९३१२९५११२५
६१.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विज्ञप्तिश्री माताजी	श्रीमति चिरंजीबाई बाकलीवाल आसाम, श्रीमति निशा पाण्ड्या (डवसन) श्रीमती कमला कासलीवाल	श्रीमान कल्पेश शाह-श्रीमति भक्ति शाह जैनम, रूपाणी सर्कल थीओसॉफीकल के सामने भावनगर (गुजरात) मो. ९८२५०५४०६८, ९४२८८५७८६८
६२.	प.पू. क्षुल्लिका १०५ विश्वनेहा श्री माता जी	सोनू जैन (कोलकाता), श्रीमती सुषमा छाबड़ा (बंगवासी), रचना हेमंत पाण्ड्या	श्रीमती राजदेवी जैन (पाटनी) पत्नी सुभाष चंद जैन मो. ८९९३९२६८५६, ९९०३१२९८२२

मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी का सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण

संसार में उन्हीं का जीवन सफल है, वे ही महा पुण्यवान हैं जो संघर्षमय जीवन के बीच भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते है, जी हाँ ऐसे ही थे परम पूज्य श्रमण मुनि श्री सुपार्श्व सागर जी महाराज। आपका पूर्व नाम श्री अनिल कुमार जैन था। श्री सतीश चंद जी श्रीमति त्रिशला देवी से आप जैसी वीर सन्तान का ११.८.६८ भाद्र वदी तीज को जन्म हुआ। आप उत्तरप्रदेश एटा नगर निवासी थे। तीन भाई, चार बहनें के बीच माता-पिता ने आपका लालन पालन किया था।

प्रारंभ से ही धार्मिक होने से आपने अनेकों संघों के विहार कराये। महाराष्ट्र जुनौनी ग्राम में आप परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के दर्शन करने गये वहाँ आपके भाव हुए कि अभी तक मैने किसी साधु को आहार नहीं दिया लेकिन इन महानतपस्वी को तो आहार देना ही है। आपने परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सन्मति सागर महाराज से आहार देने की भावना व्यक्त की उस समय आपकी बात सुन तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज मुस्कुराते हुए बोले- अरे! आप जैसे युवा आहार देने लायक नहीं आहार लेने लायक हैं। आचार्यश्री की बात को प्रमाण मानते हुए उसी क्षण आपने गुरुदेव से दीक्षा की प्रार्थना कर दी। गुरुदेव ने भी बिना किसी से पूछताछ किये वहीं पास में चौक पुराकर आपको २८ मूलगुण के संस्कार कर निर्ग्रन्थ श्रमण दीक्षा १.६.२००७ ज्येष्ठ वदी एकम को प्रदान की तभी से आप मुनि श्री सुपार्श्व सागर जी महाराज के नाम से विख्यात हुए।

सन् २००७ उदगाँव महाराष्ट्र में जब तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज के साथ परम पूज्य राष्टसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का मंगल चातुर्मास हुआ था उसी समय से आप गणाचार्य विरागसागर जी महाराज से काफी प्रभावित थे।

संयम की निर्दोष साधना के साथ आपके कई चातुर्मास सानंद सम्पन्न हुए सन् २०१२ में आपका तीर्थराज सम्मेद शिखर जी में चातुर्मास था जिसमें आपने १०८ से भी अधिक पर्वतराज की वंदनाायें की वहाँ से विहार के बाद आपके एक

पैर के अगूँठे में थोड़ा-थोड़ा दर्द प्रारंभ हुआ उपचारों से उसमें कोई फर्क नहीं था अपितु उतरोत्तर बढ़ता ही जा रहा था ऐसी स्थिति में भी आप पैदल विहार कर कोलकता आये यहाँ २०१४ का चातुर्मास कर फिर सम्मेद शिखर जी गये। किन्तु बीमारी अधिक बढ़ने से अच्छे उपचार हेतु पुन: कोलकाता बेलगछिया आये। यहाँ अनवरत पांच चातुर्मास धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुए। इसी बीच बीमारी का भी काफी उपचार चला लेकिन कोई लाभ न हुआ। अंगूठे से बढ़ती हुई एम.एन.डी. नामक लाइलाज बीमारी ने आपके दोनों पैर दोनों हाथों पर अपना साम्राज्य जमा लिया था अर्थात् आप अपने आपसे न चल पाते थे न कोई कार्य ही कर पाते थे यहाँ तक की रात्रि में लिटाना करबट बदलाना भी दूसरे लोग कराते थे। आपका आहार निहार कराना मंदिर दर्शन आदि में उठाकर लाना, ले जाना आदि संपूर्ण सेवा के कार्य श्री सुपार्श्व सागर समिति के सदस्य बड़ी भक्तिभाव से करते थे।

आपके साथ आर्यिका चिंतनमति माताजी थी बेलगछिया में भी आपने कोलकाता की ही एक महिला को दीक्षा दे क्षुल्लिका सुश्रेय मति माता जी बनाया था। वे भी आपके साथ थी। सन् २०१९ में श्रमणाचार्य सुबलसागर जी महाराज भी आपकी सेवार्थ कोलकाता आये। इसी वर्ष परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज ससंघ का भी खण्डगिरि-उदयगिरि से कोलकाता होते हुए सम्मेद शिखर जाना था किन्तु कोलकाता बेलगछिया आने पर उनका यहीं चातुर्मास कराने हेतु आपने अपनी पूरी ताकत लगा दी। फलत: आपकी भावना के अनुरूप परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज ससंघ एवं परम पूज्य आचार्य सुबलसागर जी महाराज ससंघ और आप (मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी ससंघ) इन तीन संघों का एक साथ बेलगछिया में सानंद चातुर्मास हुआ।

चातुर्मास के पूर्व ही आपने अपने मन की भावना व्यक्त करते हुए आर्यिका चिंतनमति माता जी से कह दिया था कि इस वर्ष गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का सान्निध्य प्राप्त होगा उनके चरणों में या तो मेरी बीमारी ठीक होगी या सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण होगा।

संपूर्ण चातुर्मास में आपके मुख की प्रसन्नता ही हर वर्ष से इस वर्ष अधिक थी परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज द्वारा स्वाध्याय व प्रवचन में की जाने वाली अध्यात्मिक वर्षा को आप बड़े मनोयोग से श्रवण करते थे और प्रसन्नता व्यक्त करते थे। समय-समय पर प्रत्येक कार्यक्रम के विषय में विचार विमर्श भी होता था इस प्रकार वात्सल्य भाव से ओत-प्रोत यह चातुर्मास कब निकल गया पता ही नहीं चला। चातुर्मास निष्ठापन के बाद गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का ३० अक्टूबर को विहार फाईनल हुआ जिसे रोकने में भी आपने काफी प्रयत्न किया। विहार की वार्ता से आप कुछ उदास थे साथ ही बीमारी का प्रकोप भी निरंतर बढ़ रहा था। अत: विगत ८ दिनों से आहार परिपूर्ण नहीं हो पा रहा था। चातुर्मास निष्ठापन का उपवास आचार्य श्री के मना करने पर भी आपने किया। दूसरे दिन आहार में कुछ भी अंदर नहीं गया।

वैद्यों ने इसका कारण बीमारी का गले तक आ जाना बतलाया। तीसरे दिन सभी संघ का पिच्छिका परिवर्तन होना था किन्तु उसकी परवाह न करते हुए परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज ने स्वयं संपूर्ण संघ के साथ उपस्थित होकर आपके आहार कराने का प्रयत्न किया लेकिन फिर भी गल से कुछ भी अंदर नहीं गया। तब पूज्य गणाचार्य गुरुवर ने आपके आयुकर्म की स्थिति परख ली। पिच्छिका परिवर्तन के पूर्व भी आ.श्री आपके कमरे में आये उस समय आपकी क्षीण हालत देख वो भी सजल नेत्र व हृदय हो गये। कार्यक्रम के बाद भी गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज आपके पास आये और आपका पिच्छिका परिवर्तन किया।

इसी के बाद समय के जानकार प.पू. गणाचार्य गुरुवर ने आपको १२ वर्ष की सल्लेखना व्रत दिया और कहा १२ वर्ष उपलक्षण है बांकी तो २-३ दिन अर्तमुहूर्त भी समाधि के लिये पर्याय है इस व्रत का मतलब है अब आप जीवन भर तक की गई संयम साधना पर समाधिमरण रूपी कलशारोहण करने में अग्रणीय हो गये है। उस समय आपने (मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी) श्रीफल चढ़ा गणाचार्य विरागसागर जी गुरुदेव को अपनी संल्लेखना समाधि का निर्यापकाचार्य बनाया। गुरुदेव की अज्ञानुसार संपूर्ण संघ का प्रतिक्रमण आपके कमरे से हुआ। रात्रि में भी आ. सुबलसागर जी एवं अन्य साधुजन आपकी सेवा में तत्पर थे। रात्रि १.०० गणाचार्य विरागसागर जी महाराज भी आपके पास आये संबोधन एवं आशीर्वाद दिया।

रात्रि भर आपको धार्मिक पाठ सुनाये गये सम्मेद शिखर जी की टोक वंदना के अर्ध्य सुनाये गये। प्रात: ५.०० द्वय आचार्य एवं संपूर्ण चतुर्विध संघ आपको णमोकार मंत्र सुना रहा था। उसी समय संबोधन पूर्वक गणाचार्य विरागसागर जी महाराज ने आपसे यम सल्लेखना पूर्वक चारों प्रकार के आहार त्याग करने को कहा- आपने भी सिर हिलाकर उनकी बात स्वीकृत की। आपके अंतरंग से सल्लेखना के प्रति सतर्क थे। अत: आपने स्वयं संकेत कर बैठाने के लिये कहा- सभी ने आपको बिठाया णमोकार मंत्र ऊँ नम सिद्धेभ्य: का उच्चारण एवं बीच-बीच में गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का संबोधन आपको प्राप्त हो रहा था। कुछ ही क्षण में ५ पर द्वय आचार्य एवं चतुर्विध संघ की उपस्थिति में परमात्मा के स्मरण पूर्वक आपने अपनी अंतिम श्वास छोड़ दी। आपकी सल्लेखना समाधि का यह अद्वितीय उदाहरण सभी के मन को झकझोर देने वाला है। आपके पुण्य से ११६ समाधि सल्लेखना कराने वाले कुशल निर्यापकाचार्य के रूप में परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज आपको प्राप्त हुए। आचार्य सुबल सागर जी महाराज एवं ६ पिच्छिधारी साधुओं का सान्निध्य प्राप्त हुआ जो कि अन्य लोगों के लिए अत्यंत दुर्लभ है।

संपूर्ण चातुर्मास में गणाचार्य विरागसागर जी महाराज प्रतिदिन शांतिधारी में आपका नाम लेकर भगवान से आपके स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करते रहे लेकिन रोग की असाध्यता देख अंत में सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण कराया धन्य है ऐसे महान उपकारी गुरुदेव।

श्रद्धाञ्जलि सभा

पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज के सल्लेखना पूर्व समाधिमरण पर दिनांक १ नवम्बर २०१९ को श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन उपवन मंदिर कलकता में श्री शांतिनाथ विधान का आयोजन प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ एवं पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री सुपार्श्वसागर सेवा समिति एवं श्री दिग. जैन मुनिसंघ व्यवस्था उप समिति द्वारा किया गया। जिसमें श्री दयाचन्द जी, श्रीमती निर्मला जी, श्री पारसमल जी, श्री सुमेरमल जी चूड़ीवाल, श्री महावीर जी गंगवाल, श्री सुनील जी, श्री मनीष जी, श्री निरंजनलाल जी, श्री निखिलजी एवं श्रीमती सरिता जी आदि सहित क्षुल्लिका सुश्रेयामति माताजी, आर्यिका चिन्तनमति माता जी एवं आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ने अपनी भावाव्यक्ति के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की। प.पू. गणाचार्य श्री ने पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी के असाध्य रोग की स्थिति में भी उनकी तप संयम की दृढ़ता का व्याख्यान करते हुए उकी दीर्घकाल से सेवा में लगें श्री विजय जी, श्रीमती मीना जी, श्री शैलेन्द्र जी, श्री सानू जी, श्रीमती सपनाजी, श्री दिनेश जी, श्री कुलदीप जी एवं सुपार्श्वसागर सेवा समिति ने रातदिन सेवा में लगकर उनकी निर्दोष चर्या पालन कराने की प्रशंसा करते हुए सभी को अपना मंगल आशीर्वाद दिया। अन्त में १ मिनिट के मौन के साथ कार्योत्सर्ग कर सभी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कोलकता से हुआ मंगल विहार

१ नवम्बर २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का सिद्धक्षेत्र चम्पापुर तीर्थवंदना के लिए विहार हुआ। विहार से पूर्व आयोजित धर्म सभा में श्री दिग. जैन मुनि संघ व्यवस्था उपसमिति के श्री सुमेरमल जी चूडीवाल, श्री महावीर जी गंगवाल, श्री अशोक जी पाण्ड्या, श्री मनीष जी गंगवाल, श्री विनोद जी ठोल्या, श्री नवनीत जी, श्री अरहंत जी, श्री सन्तोष सेठी, श्री संजय काला आदि ने चतुर्मास में संघस्थ साधुओं की व्यवस्थाओं यदि कहीं कोई कमी हुई हो अथवा किसी भी प्रकार की कोई अविनय हुई हों उसके लिये क्षमा याचना करते हुए। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से सदैव वात्सल्य पूर्ण आशीर्वाद की आकांक्षा की। प.पू. गुरुदेव ने भी सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका चिन्तनमती माताजी ससंघ ने पू. गुरुदेव की आचार्य वंदना कर मंगल विदाई की। मंगल विहार में काफी श्रावकगण साथ चले।

चातुर्मास में हुई तप साधना

श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर बेलगछिया कलकता में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ पू.

आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ की ६१ पिच्छी द्वारा चातुर्मास काल १४६९ उपवास २२६ नीरस एवं ३८९३५०५६ जाप एवं अन्यन्य स्वाध्यायादि रूप से साधना की जिसका विवरण निम्मनुसार है-

चातुर्मास काल में संघस्थ साधुओं द्वारा की गई साधना-

नाम	कुल उपवास	नीरस	व्रत	जाप	स्वाध्याय
प.पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	११	३	चारित्र शुद्धि कल्पामर	१२५०००	ज्योतिलोक का शोध पूर्ण लेखन
पू.आ.श्रीसुवलसागर जी	-	-	-	-	-
मुनिश्री विहित सागर जी	४१	२	चौसठ ऋद्धि	४६६४००	सिद्धों का खजाना रत्नकरण्ड श्रावकाचार
मुनिश्री विश्वलोचन सागर जी	१४	०	चौसठ ऋद्धि	१०६०००	समयसार देशना
मुनिश्री विवर्धनसागर	२२	१	चारित्र शुद्धि ६४ ऋद्धि	८४०००	प्रकृष्टि देशना
मुनिश्री विश्वविदसागर	६	०	चारित्र शुद्धि	२५१५०००	शान्तिनाथ पुराण णमोकार मंत्र
मुनिश्री सुपार्श्व सागर जी	६	०	-	-	-
मुनिश्री विदाम्बर सागर	१४	१	चारित्र शुद्धि जिनमुखाव लोकन	१२५०००	समयसार/ पद्म पुराण
मुनिश्री विश्वमित्र सागर	१२	९	चारित्र शुद्धि	१५९०००	ज्ञानांकुर पदम पुराण
मुनिश्री विधेय सागर जी	१८	६	चारित्र शुद्धि, कर्म दहना	७४२००	शांतिनाथ पुराण
मुनिश्री विश्वाक्षर सागर	२५	६	चारित्र शुद्धि, रोहिणी अक्षय निधि	३०१८०००	सहज सुख का साधन हरिवंशपुराण
मुनिश्री विशौर्यसागर	९	-	कर्म दहन	११६६००००	आदर्शक्षपक जम्बूस्वामीचारित्र
श्री विश्वनायक सागर	३५	१४	चारित्र शुद्धि कल्याण मंदिर	३८०४००	-
मुनिश्री विकौशल सागर	४९	७	चारित्रशुद्धि जिन मुखावलोकन	१७८६००	-
मुनिश्री असंगसागर	१२	७	-	८४८००	समयसार
मुनिश्री अनंग सागर जी	१०	४	-	१०६०००	भक्ति आराधना, पद्म पुराण
मुनिश्री विनयंधर सागर	१२	०	भक्तामर जिनगुण सम्पत्ति	२११२६००	पदम पुराण शान्तिनाथ पुराण
मुनिश्री विश्वदक्ष सागर	२२	०	भक्तामर	५१९४००	प्रभुन चारित्र शांतिनाथ पुराण

नाम	कुल उपवास	नीरस	व्रत	जाप	स्वाध्याय
मुनिश्री विश्वभानु सागर	३१	०	षोडषकारण	१४२५६००	हरिवंश पुराण, पाडव पुराण, द्रव्य संग्रह देशना
मुनिश्री विश्वहित सागर	४२	६	चारित्र शुद्धि	९४००००	अष्टपाहुड़ समयसार पाडवपुराण
मुनिश्री विश्वधीर सागर	२३	०	षोडष कारण	९५४०००	हरिवंश पुराण
मुनिश्री विश्वभद्र सागर	३०	०	कर्म दहन कल्याण मंदिर	२५१५०००	–
मुनिश्री विनिवेष सागर	१४	०	भक्तामर	–	–
मुनिश्री विश्वानन सागर	२०	०	सहस्त्रनाम	–	रत्नकरण्ड श्रावकाचार सार
मुनिश्री विश्वानुत्तर सागर	१४	०	चारित्र शुद्धि	२१२०००	पद्मपुराण सामायिक शास्त्र
मुनिश्री विशल्य सागर	३	०	दर्शन विशुद्धि	२३३२००	–
मुनिश्री विनिबोध सागर	१२	२	दर्शन विशुद्धि	११६६००	–
मुनिश्री विनिशोध सागर	४	२	–	५३०००	समाधि क्षेत्र, शान्तिनाथ पुराण
श्र. आर्यिका विशिष्टश्री माताजी	२२	–	श्रुत कल्याणक, जिन मुखाव लोकन	२५००००	–
श्र.आ. चिंतनमती माता	१६	५	–	२४३८००	स्तुति पद
श्र.आर्यि.विजेताश्री माता	१७	११	जिनमुखावलोकन कवल चन्द्रायण	२५००००	मरण कण्डिका
आर्यि. विश्वासश्री माता	२३	७	–	८१०००	–
आर्यि. विरम्याश्री माता	३१	९	–	२५००००	णमाकार मंत्र ग्रन्थ
आर्यि.विप्राश्री माताजी	५९	९	नित्य सुखदाष्टमी जिन मुखावकोलन सकल श्रेयो निधि	–	–
आर्यि.वियोजनाश्री माता	६५	४	नित्य सुखदाष्टमी, समवशरण मंगलव्रत चारित्र माला	२०३२५६	श्रेणिक चारित्र, प्रद्यम चारित्र
आर्यि. विसंयोजनाश्री माता जी	११	१८	ज्ञान साम्रज्य, जिन मुखा वलोकन, समवशरण मंगलव्रत कवल चन्द्रायण	१२५०००	आदिपुराण

नाम	उपवास	नीरस	व्रत	जाप	स्वाध्याय
आर्यि. विरक्षणाश्री माता	३२	१०	जिनमुखावलोकन नित्यसुखदाष्टमी पोडष कारण के १६ उपाय	१२५०००	प्रद्युन चरित्र, श्रेणिक चारित्र
आर्यि. विदितश्री माता	३	१	–	–	–
आर्यि. विदिताश्री माता	१४	५	जिनमुखावलोकन कवल चन्द्रायण	८१०००	–
आर्यि. विभक्ताश्री माता	५१	–	–	१२५०००	णमोकार मंत्र ग्रंथ
आर्यि. विसुव्रताश्री माता	२०	९	जिनमुखावलोकन	१२५०००	प्रद्यनचरित्र श्रेणिक चारित्र
आर्यि. विजितश्री माता	१७	६	–	–	–
आर्यि. विकुन्दनश्री माता	५	५	–	–	प्रद्युन चरित्र
श्रमणी आर्यि. विजिज्ञासा श्री माताजी	१३	११	–	–	–
ऐ.अकम्प सागर जी	१२	१	–	६४८००	–
ऐ. विनियोगसागर जी	१९	–	–	७१३०००	रत्नकरण्ड श्रावकाचार समय.
क्षु. विश्वभूषण सागर	२३	–	चारित्र शुद्धि	२०१२०००	–
क्षु. विश्वबन्धु सागर जी	१४	–	–	४२४०००	इष्टोपदेश
क्षु. अनमोल सागर जी	१४	–	–	–	–
क्षु. विश्वज्ञेय सागर जी	२७	–	–	१५९००००	हरिवंशपुराण
क्षु. अगण्य सागर जी	१२	–	–	६४२००	–
क्षु. विश्वरक्ष सागर जी	३१	२८	–	–	–
क्षु. विवक्षित सागर जी	१२	–	–	३१८०००	पद्मपुराण
क्षु.विश्वमार्दव सागर जी	२	–	दर्शन विशुद्धि	–	–
क्षुल्लिका विप्रदाश्री माता	२६	–	–	६२५०००	कथा मंजूषा
क्षुल्लिका विसदृढश्री माता	२६	–	–	५०००००	कथा मंजूषा, पद्मनन्दी भाग ८
क्षुल्लिका विश्रमाश्री माता	२८	–	–	२५००००	–
क्षुल्लि. विरोचनाश्री माता	४७	४	–	२५००००	–
क्षुल्लि. विपद्मश्री माता	२९	१	जिनमुखा वलोकन	२६१०००	पाण्डव पु.वरांगचरि. द्रव्यसंग्रह

नाम	उपवास	नीरस	व्रत	जाप	स्वाध्याय
क्षुल्लि. विकण्ठश्री माता	२५	३	जिनमुखा वलोकन	१२५०००	-
क्षुल्लि. सुश्रेयमतिश्री माता	१७	-	-	६७८४००	भगवती आराधना
क्षुल्लि.विश्वसिद्धिश्री माता	१४	५	जिनमुखावलोकन	-	-
क्षुल्लि.विज्ञप्तिश्री माता	५०	-	जिनमुखावलोकन	५४००००	समयसार
क्षुल्लि.विश्वनेहाश्री माता	५६	९	जिनमुखावलोकन	६२५०००	प्रद्यनचरित्र श्रेणिक चारित्र
	१४४७	**२२६**		**३८९३५०५६**	**कुल जाप**

ब्र. निर्मल भैया - ०
ब्र. कैलाश भैया - १३
बा.ब्र. सुकुमाल भैया - १३
ब्र. प्रकाश चन्द्र - ६
बा.ब्र. हेमा दीदी - २
बा.ब्र. मीना दीदी - २
बा.ब्र. रूवी दीदी - ७
बा.ब्र. आशा दीदी - ३

बा.ब्र. काजल दीदी - ४
बा.ब्र. अल्का दीदी - ६
बा.ब्र. भारती दीदी - ७
बा. ब्र. गुजा दीदी - ८
ब्र. विमला दीदी - २
बा.ब्र. प्राची दीदी - २

१४६९ उपवास
२२६ नीरस, ३८९३५०५६ जाप

भव्य जैनेश्वरी दीक्षाएँ सम्पन्न

१० नवम्बर २०१९ को प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के २८वें आचार्य पदारोहण दिवस पर पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज द्वारा बा.ब्र. सार्थक भैया भिण्ड बा.ब्र. माणिकान्त भैया नटेख जि.-विदिशा, बा.ब्र. अंकित भैया छिदबाड़ा को निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा एवं बा.ब्र. देवास देवेन्द्र नगर को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान कर क्रमशः श्रमण मुनि श्री यशोधर सागर जी मुनिश्री यतीन्द्र सागर जी क्षुल्लक यत्नसागर जी के नाम संस्कार किये।

पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज चातुर्मास सौभाग्य भिण्ड नगर को प्राप्त हुआ एवं प्रथम बार भिण्ड नगर में उनके द्वारा ४ मुमुक्षुओं को भव्य जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की गई।

महत्वपूर्ण जानकारी

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर ससंघ कहाँ विराजमान हैं, जानने के लिए Google अथवा किसी भी इंटरनेट Browser पर जाकर टाईप करें।

Viragsagar.trackerbox.co.in जो Location दिखाएँ उसे बड़ा करके उसके विषय में तथा आस-पास की Location के विषय में जाना जा सकता है।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

प.पू. अध्यात्मयोगी, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के ''२८वें आचार्य पदारोहण दिवस'' के पावन अवसर पर आयोजित

''श्री विराग सम्यक्ज्ञान वर्धनोत्सव प्रतियोगिता''

''पद्म पुराण भाग'' -2 परीक्षा परिणाम

इसमें १५ प्रांतों के भक्तों ने बड़े ही उत्साह पूर्वक बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिसमें-

प्रथम पुरस्कार - **पूर्णांक २३१**

१. **श्रीमती ममता जैन 'गोदरे' पत्नी श्री राकेश जैन 'गोदरे'**
पता - श्री राकेश 'गोदरे', ३१/२ जवाहर गंज वार्ड, अतिशय मोबाइल,
कटरा पुलिस चौकी के सामने, सागर (म.प्र.) मो. ८८३९२९०३०५, ९४२५४३७०६४

२. **श्रीमती प्रिया जैन पत्नी श्री नितिन जैन** **पूर्णांक २३०**
पता - C/o Indian overseas banle, Pratap Singh Chowk, opp. Tamhane Automobile,
Akluj, Taluka Mashiraj, Dist. Solapur. (Mh.) Mobi. 8109902499, 8830288121

द्वितीय पुरस्कार - **पूर्णांक २३०**

१. Smt. Snati Jain W/o Shree Siddhant Jain
Add. The Raymond Shop 38 K.P. Road, Gaya (Bihar) Mobi. 8002622271
पता - श्री राकेश 'गोदरे', ३१/२ जवाहर गंज वार्ड, अतिशय मोबाइल,
कटरा पुलिस चौकी के सामने, सागर (म.प्र.)

२. **आराध्य जैन पुत्री श्रीमान अजय जैन** **पूर्णांक २३०**
पता- परवारी मौहल्ला, छतरपुर (म.प्र.) मो. ८७७०४३८८२३

३. **ब्र. ममता जैन पुत्री श्री दिलीप जैन कांतिलाल जैन** **पूर्णांक २२९**
पता- कपड़ा दुकान, बाजार पेठ, सोनगीर, ता.जि. धुलीयाँ (महा.)
मो. ९४२३२८८०२७, ९४२३२९५५२७

तृतीय पुरस्कार -

१. **श्रीमती सरला पाटनी पत्नी स्व. श्री सुरेश पाटनी** २२९
पता- ४९/ए, स्ट्राण्ड रोड, कोलकाता ७०००० मो. ९८३६७१७२५७

२. **श्रीमती नेहा जैन पत्नी श्री अमल जैन** २२९
पता- अमल जैन, सुपर टैक अवन्त ग्रैंड से. ५ फ्लैट नं. ८०७ वैशाली (गाजियाबाद)
मो. ०९७१८८८६६१८

३. **श्रीमती वनिता घिरावत पत्नी श्रीमान अनिल जी घिरावत** २२८
पता- जैन मंदिर के पास घाटोल, जिला- बांसवाड़ा (राज.) मो. ९४१३८३०११२

४. **श्रीमती पूजा जैन पत्नी नीतेश कुमार जैन** २२८
पता- Velasamy Street, Near old kamraj kalyan Mandpam Arisipalyam,
Salem (Tamilnadu) Mobi. 9543193215

५. **श्रीमती प्रियंका कासलीवाल पत्नी श्री रवि कासलीवाल** २२८
पता- ६/१, वड सल्ला स्टोर ४ फ्लोर कलकत्ता मो. ८२४००१९००१, ८२७२९१८३५५

''सान्त्वना पुरस्कार''

१. **सौ. लता जैन पत्नी श्री अरूण पन्नालाल जैन** २२८
पता- मु.पो. धुलीया, ता.जि.- धुलिया फोन नं. ०२५६०-२७०२२७

२. **श्रीमती ऊजा जैन पत्नी श्री प्रकाश चन्द्र जैन** २२७
पता- किले के सामने भिण्ड/ बालावाई का बाजार ग्वालियर

३. **श्रीमती आर्ची चन्दौरिया पत्नी श्री अंकुर चन्दौरिया** २२७
पता- ३१/१९७ माणिक्य नगर, भीलवाड़ा (राज.) मो. ९७८३०२६५३६

४. **श्री संजय जैन पुत्री श्री निर्मल चन्द्र जैन** २२६
पता- हाउसिंग कॉलोनी शहीद चौक भिण्ड (म.प्र.) मो. ९८२६२२३०५६

५. **श्रीमती शशि कासलीवाल पत्नी श्री भानुप्रकाश जैन** २२५
पता- १० बेचाराम चौधरी लेन हाबड़ा-७१११०१ डवसन रोड कोलकाता मो. ८७७७२०५८६५

घर में घड़ी लगाने से पूर्व रखें इन बातों का ध्यान

महंगी घड़ी पहनने से अच्छा समय नहीं आता अर्थात् व्यक्ति के दिन नहीं बदलते लेकिन वास्तु के अनुसार घड़ी व्यक्ति का वक्त बदल सकती है। घड़ी व्यक्ति के समय को अच्छा और बिगाड़ भी सकती है, वास्तु के कुछ सरल उपायों का ध्यान रखने से व्यक्ति अपने बुरे समय को अच्छे दिनों में बदल सकता है- जानिए घड़ी से संबंधित कुछ बातें-

- ❖ वास्तु के अनुसार घर की दक्षिण दिशा में घड़ी लगाने से उन्नति के अवसरों में बाधा उत्पन्न होती है, इसके अतिरिक्त घर के मुखिया का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता।
- ❖ दरवाजे पर घड़ी नहीं लगानी चाहिए, यहां घड़ी लगाने से घर से अंदर-बाहर आने-जाने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव घड़ी पर आ जाता है, जिससे कई प्रकार की परेशनियों का सामना करना पड़ता है।
- ❖ वास्तु विज्ञान में उत्तर और पूर्व दिशा को वृद्धि की दिशा माना गया है इसलिए घड़ी उत्तर या पूर्व दिशा की दीवार पर लगाएँ।
- ❖ घर में पेंडुलम वाली घड़ी लगाने से व्यक्ति के जीवन का बुरा समय दूर होता है और उन्नति के नए अवसर मिलते हैं।
- ❖ घर में बंद घड़ी नहीं रखनी चाहिए, इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा में कमी आती है इसके साथ ही ऐसी घड़ी व्यक्ति की प्रगति में रूकावट बनती है, घर की सारी बंद पड़ी घड़ियों को घर में न रखें इसके साथ ही घड़ी पर धूल भी नहीं जमनी चाहिए।
- ❖ सही समय से आगे और पीछे चलने वाली घड़ियाँ शुभ नहीं होती। ऐसी घड़ियों से व्यक्ति को मुश्किलों और नुकसान का सामना करना पड़ता है घड़ी को सही समय पर सेट करके रखना चाहिए।
- ❖ घर में हरे और ऑरेज रंग की और दुकान में काले और डार्क नीले रंग की घड़ी नहीं लगानी चाहिए इससे घर और दुकान में नकारात्मक ऊर्जा का वास होता है।
- ❖ घर के हॉल में चौकोर और शयन कक्ष में गोल घड़ी लगानी चाहिए, ऐसा करने से घर में शांति और प्यार बना रहता है।
- ❖ तकिए के नीचे घड़ी रखना वास्तु की दृष्टि से अशुभ मानी गई है, इससे व्यक्ति की विचारधारा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ती है, जिससे उसके स्वभाव में बदलाव आता है।
- ❖ घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार बना रहे इसके लिए मधुर संगीत वाली घड़ी को दीवार पर लगाना चाहिए।

मौन का संकल्प लेना पड़ता है

मौन आपको एकाग्रता की शक्ति देता है। इससे विचारों में स्पष्टता आती है, मन विचार-रहित हो पाता है। आप भावनात्मक रूप से संतुलित हो जाते हैं। जब मन शक्तिशाली होता है, तो शरीर की शक्ति भी बढ़ जाती है। यह सब चीजें

मिल जाएँ, तो जीवन कितना अच्छा चलेगा। आपका मन शांत हैं, एकाग्र है और मन में कोई उलझन भी नहीं है। मन में कोई संशय नहीं है और आपको अपनी संगत अच्छी लगती है। अधिकतर हमें अपना साथ अच्छा नहीं लगता है। इसलिए हम किसी और को ढूंढते रहते हैं।

जिसका मन अपने साथ लग जाता हैं, उसे साधक कहते हैं। उसको अपनी ही संगत में रहना अच्छा लगता है पर जो लोग खाली होते हैं, उनको सूझ ही नहीं लगती कि समय का क्या करें? वह कहते हैं कि हम वक्त गुजार रहे हैं। मौन अंतर्मुखता का साधन है। मौन में व्यवहार कम से कम हो सके, इसलिए थोड़ा सा दृष्टि का नियम भी रखें कि किसी के साथ आंखों से भी संपर्क न हो। न मंत्र बोलना न भजन बोलना न आरती बोलना, बोलना ही कुछ नहीं। होंठ जैसे सिल गए। ईश्वर के प्रेम में, गुरु के प्रेम में होंठ सिल जाएं, तो ज्यादा अच्छा है। पर उतना प्यार नहीं है, तो फिर मौन का संकल्प लेना पड़ता है कि चलों अब थोड़ी देर के लिए चुप हो जाते हैं। असली मौन घटित होता है, यह करने की चीज नहीं है। अपने आप होता है, अनायास होता है।

गुरु माँ आनंदमयी

भारत के मंदिरों में क्यों अर्पित करते हैं नारियल

भारत में मंदिर के लिए सबसे लोकप्रिय भेंट एक नारियल है। विवाह और पर्वों पर नई गाड़ी, पुल, घर आदि का उपयोग करने से पूर्व भी नारियल भेंट किया जाता है। जल से भरा एक कलश लेकर उस पर आम के पत्ते सजाए जाते हैं और ऊपर एक नारियल रखा जाता है। इससे महत्वपूर्ण अवसरों पर पूजा की जाती है और इसके साथ महात्माओं का स्वागत भी किया जाता है। होम करते समय यज्ञ की अग्नि में भी नारियल अर्पित किया जाता है। नारियल को फोड़ा जाता है और भगवान के सामने रखा जाता है। बाद में इसे प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है। भगवान को प्रसन्न करने के लिए अथवा अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए इसे अर्पित किया जाता है। एक समय था जब हमारी पशु-प्रवृत्तियों को भगवान को अर्पित करने के प्रतीक के रूप में पशु-बलि देने की प्रथा थी। धीरे-धीरे यह प्रथा लुप्त हो गई और इसके स्थान पर नारियल अर्पित किया जाने लगा। सूखे नारियल के ऊपर के गुच्छे को छोड़ कर, उसका रेशा उतार दिया जाता है। नारियल के ऊपर के निशान एक प्राणी के सिर जैसे दिखाई देते हैं। नारियल तोड़ना, अहं को समाप्त करने का प्रतीक है। अंदर का रस जो हमारी वासनाओं का द्योतक हैं, सफेद गरी (जो मन का प्रतीक है) के साथ, भगवान को अर्पित किया जाता है। इस प्रकार भगवान के स्पर्श से शुद्ध हुआ मन-प्रसाद बन जाता है।

मंदिरों में और बहुत से घरों में किए जाने वाले पारम्परिक अभिषेक के अनुष्ठान में भी देवता पर दूध, दही, शहद, नारियल का कोमल पानी, चंदन का लेप, भस्म आदि बहुत पदार्थ उंडेले जाते हैं। प्रत्येक पदार्थ का श्रद्धालुओं को लाभ प्रदान करने की दृष्टि से विशिष्ट महत्व है। अभिषेक की प्रथा नारियल के कोमल पानी को प्रयोग इसलिए किया जाता है कि विश्वास के अनुसार यह एक जिज्ञासु का आध्यात्मिक विकास करता है। नारियल नि:स्वार्थ सेवा का प्रतीक भी है। इसके वृक्ष के प्रत्येक भाग-तने, पत्ते, फल, रेशा आदि का उपयोग असंख्य ढंग से छप्पर, चटाईयाँ, स्वादिष्ट पकवान, तेल, साबुन आदि बनाने के लिए किया जाता है। यह धरती से खारा पानी भी ले लेता है और इसे पौष्टिक मीठे पानी में बदल देता है, जो रोगियों के लिए विशेष लाभदायक है।

इसका प्रयोग बहुत सी आर्युवैदिक दवाइयाँ बनाने और अन्य चिकित्सा पद्धतियों के लिए भी किया जाता है। नारियल के ऊपर बने चिन्हों को तो त्रिनेत्र भगवान शिव का स्वरूप भी माना जाता है। इसीलिए यह हमारी इच्छाओं की पूर्ति का एक साधन समझा जाता है। कुछ विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों में नारियल को कलश पर रखा जाता है, संजाया जाता है, इस पर माला चढ़ाई जाती है और इसकी पूजा की जाती है। यह भगवान शिव का और ज्ञानी पुरुष का प्रतीक है।

साधना में गति के लिए शाकाहार

मनुष्य शाकाहारी वर्ग का प्राणी है। उसके शरीर और पाचनतंत्र की सरंचना ऐसी है जिसके लिए क्षारीय और रेशेदार

भोजन की आवश्यकता होती है।

गलतफहमी भर है कि मांसाहार सेहत के लिए फायदेमंद है। योग और भक्ति के तमाम आचार्य शाकाहार के कारण करूणा, सात्विक भाव और साधना में गति के लिए शाकाहार को उपयोगी मानते हैं। मनुष्य शाकाहारी वर्ग का प्राणी है। जिसके शरीर और पाचन तंत्र की संरचना ऐसी है कि उसके लिए क्षारीय और रेशेदार भोजन की आवश्यकता होती है। डॉ. रॉबर्ट मेकेरियन के अनुसार, मनुष्य को जीवित रहने के लिए अल्प एवं सात्विक भोजन की आवश्यकता है। विटामिन, कैल्शियम व फॉस्फोरस से युक्त शाकाहारी भोजन से ही मनुष्य अधिक स्वस्थ व प्रसन्न रह सकता है। मांस का मात्र ६० प्रतिशत हिस्सा ही पोषक रहता है। शेष ४० प्रतिशत विकृत पदार्थ से भरा रहता है। विषैले तत्व रक्त में घुलकर पूरे शरीर को विषाक्त बनाते हैं शहरी क्षेत्रों में सभ्यता के नाम पर लोगों के खानपान का चिंतनीय ह्रास हुआ है। डॉ. एडवर्ड सोन्डर्स के अनुसार, आने वाली दुनिया मांसाहार के नाम मात्र से भयभीत हो उठेगी। उसे शाकाहार के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

विक्रम सिंह

धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं

इंसान सामाजिक रूप से गिरावट की तरफ जा रहा है। इसकी स्वार्थ की भावना इतनी बढ़ चुकी है कि वह दूसरों को नीचा दिखाता है, दुर्व्यवहार करता है, नफरत, वैर को नहीं छोड़ता। इस अवस्था के कारण इंसान का म्यार गिरता जा रहा है, इसलिये दीवारें बड़ी होती चली जा रही हैं और एक इंसान दूसरे इंसान से कटता ही जा रहा है।

महापुरुषों ने हमें जुड़ना सिखाया था, मिलवर्तन, भाईचारें, एकरूपता की बात की थी। उन्होंने मानवता का ही पैगाम दिया, मिलवर्तन और भाईचारे को ही महत्व दिया। अगर मानवता का भाव हमारे हृदय में घर कर जाता है तो फिर हम शोषण की तरफ नहीं, तप-त्याग की तरफ चलेंगे। अपने आप को पीछे और दूसरे को आगे रखने का भाव हो जायेगा। फिर कहीं भी दूसरे को नीचा दिखाने और अपने आप को ताकतवर और ऊंचा मानने की दौड़ नहीं लगेगी। पांचों उंगुलियाँ बराबर नहीं होती हैं, उनका आकार अलग-अलग है लेकिन अक्सर हम वह हाथ जिसका ये हिस्सा हैं, उसे भूल जाते हैं और उन उंगलियों तक सीमित रह जाते हैं। उंगुलियाँ जब एकजुट होकर मुट्ठी का रूप हो जाता हैं तो भारी से भारी वजन भी उठा लेता हैं। कहने का तात्पर्य है कि महापुरुषों ने अनेकता में एकता की बात की है, बंटने की नहीं, जुड़ने की बात की है।

इस बात को ध्यान में रखें कि धर्म जोड़ता है, तोड़ता नहीं। जो तोड़ने में लगा रहता है, वह धर्म हो ही नहीं सकता। जेा इंसान को इंसान से जोड़ने का काम करता है, इंसान, इंसान के दरम्यिान की दूरियों को समाप्त करना है, वह धर्म हुआ करता है। धर्म की पहचान ही यही है, इसलिए जो जुडते हैं, जोड़ते हैं वही सच्चे धार्मिक होते हैं, वहीं सच्चे सज्जन होते हैं। यही आस की जाती है कि इंसानों को सुमति मिले ताकि सभी जुड़कर रहें और औरों को भी जोड़ने का काम करें न कि तोड़ने का काम करें, न कि दूरियाँ पैदा करने का काम करें। तमाम पैगम्बरों ने मिलवर्तन की ही बात की है। हमारी भाषा अलग रहेगी। ये अनेकता तो इस रूप में रहेगी लेकिन एकता को हमने महत्ता देनी है, एकता के सूत्र में बंध कर रहना है, इसलिए संतजन कहते हैं कि जरा सोचो, समझो, तुम्हें मालिक ने सोचने-समझने की शक्ति दी है, ताकत दी है।

क्यों इस पर पर्दा डाले हो, क्यों नशे में चूर हो ? क्यों अपना लोक और परलोक दोनों ही बिगाड़ रहे हो ? गुरु-पीर-पैगम्बरों ने लोक और परलोक संवारने की बात की है। हर पहलू को संवारने की बात की है, अपने मन को संवारने की, अपनी वाणी को संवारने की, अपने व्यवहार को संवारने की। वरना तो हम कपड़े भी पहनते हैं वे भी चाहते हैं कि मैले नहीं संवरे हुये कपड़े पहनें। जिस सोफे, कुर्सी पर बैंठे वह भी मैला-कुचेला न हो, संवरा सा हो। जिस बिस्तर पर लेटते हैं, वह भी संवरा हुआ हो। जो पदार्थ भोजन करते हैं, उसमें कोई कंकड़ न हो, वह भी संवरा हुआ हो। भौतिक जगत में हम सब संवरा-संवरा अपनाना चाहते हैं लेकिन जहाँ पर जीवन की बात आती है, वहां पर न हमारा मन संवरता है, न वाणी संवरती हैं, न हमारा व्यवहार संवरता है। जब यह ही नहीं संवरेगा तो लोक और परलोक क्या संवरने वाले हैं ? न आत्मा का कल्याण होने वाला है और न ही इस मन को, इस जीवन को सुंदरता मिलने वाली है।

विराग वर्ग पहेली 48

उदाहरण - र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे-विराग

धो	म	सा	शा	मु	त्मा	आ	खा	दे
गी	इ	जि	र	र	स	दि	न	दु
न	ष्ठो	क	र	सा	म	य	नि	नि
ध	प	त	या	न	ग	या	द	पं
बो	दे	श	गु	च	रू	यो	चा	ण
सं	श	धि	की	व	आ	स्ति	ये	हु
प	र	मा	त्म	प्र	का	श	गी	पा
रू	गु	स	म	य	सा	र	र	ष्ट
स्व	फि	र	भी	अ	प	ना	ले	अ

विराग वर्ग पहेली 47 के उत्तर

(1) मार्ग प्रभावना
(2) दर्शन विशुद्धि
(3) बहुश्रुत भक्ति
(4) शक्तितस्तप
(5) अर्हत भक्ति
(6) विनय सम्पन्नता
(7) आचार्य भक्ति
(8) संवेग
(9) साधु समाधि
(10) वैय्यावृत्ति

नोट- (1) आपको इसमें द्रव्यानुयोग के १० शास्त्र के नाम खोजना हैं।
(2) इसमें जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....